डा० नारायण दत्त श्रीमाली

भौतिक सफलताएँ : साधना एवं सिद्धियाँ

भौतिक बाधाओं पर विजय प्राप्ति के सफल प्रयोग

नारायण दत्त श्रीमाली

साधक

मनोज-चन्द्र श्रीवास्तव

प्रकाशक

मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

टेलीफोन - ०२९१ - ३२२०९

मुद्रक

मन्त्र - तन्त्र - यन्त्र विज्ञान प्रकाशन

हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर — ३४२००१ (राजस्थान)

-: चेतावनी :-

साधना कार्य एक कठिन कार्य है, इस पुस्तक में जो साधनाएं दी गई हैं, वे प्रामाणिक हैं, पर सफलता और असफलता के मूल में साधक का विवेक और सामर्थ्य-शक्ति मुख्य रूप से प्रभावक रहती है, अतः इन साधनाओं की सफलता-असफलता के प्रति प्रकाशक लेखक या सम्पादक किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है, पुस्तक के अन्त में जो सामग्री विवरण है, यह सामग्री घुमक्कड़ साधु सन्तों से मन्त्र सिद्ध प्राप्त होती है, अतः उनके सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की आलोचना - आपत्ति इस पुस्तक के लेखक, सम्पादक, मुद्रक को मान्य नहीं होगी।

मूल्य ३०) रुपये

卐

प्रकाशकीय

मन्त्र तन्त्र यन्त्र प्रकाशन के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाली यह पुस्तक जन साधारण के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और सहायक है, अब वह समय आ गया है, जब बिना किसी पण्डित के साधक स्वयं साधना सम्पन्न करना चाहता है, और अपनी समस्याओं का समाधान चाहता है, यह पुस्तक ऐसे ही साधकों के लिए मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत की जा रही है।

इसमें ऐसी साधनाएं दी गयी हैं, जिन्हें सामान्य गृहस्थ, स्त्री, पुरुष सम्पन्न कर सकते हैं, उन्हें न बहुत अधिक विधि-विधान की जरूरत है, और न विद्वता की। सामान्य सामग्री के माध्यम से वे पुस्तक में वर्णित साधना करके अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं, इस पुस्तक में ऐसी ही साधना विधियां हैं, जो सरल हैं, सुगम और जन समाज के लिए उपयोगीहैं साधना करने से पूर्व यदि साधक पूज्य गुरुदेव जी से दीक्षा प्राप्त कर ले तो पूज्य गुरुदेव साधना में पूर्ण सफलता हेतु आशीर्वाद प्रदान कर सकेंगे और साधना में आने वाली बाधाओं का निवारण कर सकेंगे, दीक्षा आप अपना फोटो भेजकर स्मार्ता विधि से भी ग्रहण कर सकते हैं।

इस पुस्तक में उन समस्याओं का ही समावेश किया गया है, जो समस्याएं अधिकतर गृहस्थ लोगों के जीवन में आती हैं, आज प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है, कि वह इस प्रकार से आने वाली समस्याओं से मुक्त हो सके और जीवन को ज्यादा सुखी, ज्यादा सरल और ज्यादा अनुकूल बना सकें, यह पुस्तक ऐसे ही गृहस्थ व्यक्तियों के लिए आदर्श है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ के घर में संजोकर रखने लायक है, यदि वे इस पुस्तक के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान पा सके, तो हम अपना प्रयास सफल समझेंगे।

प्रकाशक

दो शब्द

जीवन में पग-पग पर आने वाली बाधाओं का पूर्ण निवारण पूजा-अर्चना अथवा साधना के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति आसानी से कर सकता है। इस बात का ध्यान रखा गया है, कि गृहस्थ व्यक्ति जटिल विधि-विधान या क्रिया कलाप में नहीं उलझ सकते। वे अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकाल कर साधना या मन्त्र जप कर सकते है और वह सब कुछ प्राप्त कर सकते है, जिसकी उन्होंने इच्छा की है वे अपने बाल-बच्चों और परिवार के लिए सभी साधन-सुविधाए जुटा सकते है जो उन्होंने असम्भव समझी थी।

किसी भी साधना या पूजा - अर्चना में कुछ वस्तुओं की जरूरत पड़ती है, क्योंकि मन्त्र का सीधा सम्बन्ध उस उपकरण से ही झंकृत हो सकता है, इसलिए उपकरण के चयन में सावधानी बरतनी चाहिए, कोई भी वस्तु शुद्ध हो, प्रामाणिक हो तथा पूर्ण मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त मन्त्र चैतन्य हो तो निश्चय ही सफलता मिल सकती है। इस प्रकार की साधनाए पुरुष या स्त्री, बालक या वृद्ध कोई भी कर सकता है, परिवार में कोई एक व्यक्ति साधना कर सफलता प्राप्त करता है, तो उसका लाभ पूरे परिवार को प्राप्त होता है।

प्रत्येक गृहस्थ को इन प्रयोगों में से कुछ प्रयोग अवश्य ही करने चाहिए, जिससे कि वे अपने जीवन के अभावों को मिटाकर जीवन को संवार सकें, पूर्णता और खुशियां प्राप्त कर सकें, गरीबी और भूख से संघर्ष कर उसे समाप्त कर सकता है, दुर्बलता और अशक्तता को समाप्त कर पुनः यौवन प्राप्त कर सकता है, सही अर्थों में अपने शरीर का कायाकल्प कर पूर्ण सौंदर्य और यौवन प्राप्त कर जीवन के आनन्द का उपयोग कर सकता है, और पूर्ण सम्पन्नता प्राप्त कर वे सारी सुविधाए भोग और ऐश्वर्य प्राप्त कर सकता है, जो मानव जीवन का आधार है।

—लेखक

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

प्रवेश

संसार निरन्तर परिवर्तनशील है और समय के साथ-साथ युग की ओर व्यक्ति की मान्यताएं, भावनाएं और इच्छाएं बदलती रही हैं, एक समय ऐसा था, जब व्यक्ति सामाजिक अवस्था में रहते हुए भी उसकी आवश्यकताएं न्यून थीं और वे परस्पर मिल कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते थे, किसान अपना अनाज मोची को देता था और बदले में जूते बनवा लेता था, मोची चमड़े का काम करके दर्जी को देता था और बदले में अपने कपड़े सिलवा लेता था, इस प्रकार वे परस्पर एक दूसरे के सहयोग से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते थे।

परन्तु धीरे धीरे युग में परिवर्तन आया और व्यक्ति के मन में एक दूसरे के प्रति सन्देह का वातावरण बढ़ा, उसने सोचा कि मैं अनाज दे रहा हूं, वह ज्यादा कीमती है, इसकी अपेक्षा यह जो मोची मुझे काम करके देता है, उसका मूल्य कम है, ऐसी स्थिति आने पर मुद्रा का विनिमय प्रारम्भ हुआ, जीवनमें एक दूसरे के कार्य की पूर्ति में मुद्रा मुख्य आधार बन गया।

लेकिन आगे चल कर सामाजिक जीवन ज्यादा से ज्यादा जटिल होता गया, एक दूसरे में आगे बढ़ने की होड़ लग गई और जल्दी से जल्दी अपने लक्ष्य तक पहुंचने की भावना तीव्र हो गई, प्रत्येक व्यक्ति इस प्रयत्न में लग गया कि जल्दी से जल्दी उस गन्तव्य स्थल तक पहुंच जाय जो कि उसका लक्ष्य है, फलस्वरूप उसमें प्रतिस्पर्धा, द्वेष और एक दूसरे को पछाड़ने की प्रवृत्ति बढ़ गई, व्यापारी जल्दी से जल्दी लखपति बनने की फिराक में मशगूल हो गया, अधिकरी अपने विभाग में सबसे ऊंचे पद पर पहुंचने के लिए जोड़ तोड़ करना प्रारम्भ कर दिया और इस प्रकार एक ऐसी होड़ लग गई, जिसके रहते किसी प्रकार की शान्ति

नहीं, प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक छटपटाहट एक बेचैनी एक असन्तोष की भावना बढ़ने लगी, परन्तु इससे एक लाभ यह भी हुआ कि व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा सक्रिय हो गया और इस प्रकार इस प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप उन्नति के द्वार सभी के लिए समान रूप से खुल गये।

भारतीय प्राचीन विद्याएं

परन्तु जब एक लक्ष्य हो और प्रतिस्पर्धी ज्यादा हों, तो एक विशेष प्रकार की होड़ व्यक्ति के मन में जम जाती है, वह अपने भौतिक प्रयत्नों के साथ-साथ भारत की प्राचीन विद्याओं की तरफ भी उन्मुख होने लगा और उनके माध्यम से अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए भी प्रयत्नशील बना, उसने इस सम्बन्ध में प्रयत्न भी किये और जब उसने अनुभव किया कि अन्य भौतिक प्रयत्नों की अपेक्षा इनसे जल्दी और निश्चित सफलता मिलती है, वह इसकी खोज में ज्यादा से ज्यादा प्रयत्नशील बना, वह ऐसे मन्त्रों व साधना विधियों की खोज में बढ़ा, जिससे उसकी इच्छा पूर्ति हो सके।

मन्त्र-तन्त्र, साधना उपासना, पूजा-पाठ आदि हमारी प्राचीन संस्कृति का मजबूत आधार रहा है, एक ऐसा समय भी था, जब हम इनकी बदौलत संसार में अग्रगण्य थे और हमने समस्त भौतिक सुविधाओं को सुलभ कर लिया था, जिस समय पूरा संसार अज्ञान और अशिक्षा के अन्धकार में डूबा हुआ था, उस समय भी हमने प्रकृति को अपने नियन्त्रण में सफलतापूर्वक ले लिया था, लंकाधिपति रावण ने पवन, अग्नि और अन्य प्राकृतिक तत्वों को मन्त्रों की सहायता से इतना अधिक नियन्त्रण में कर लिया था कि वे उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करते थे, हमारे पूर्वज त्रिकालदर्शी थे और वे अपने स्थान पर बैठे-बैठे हजारों लाखों मील दूर घटित घटनाओं को अपनी आंखों से देखने में समर्थ थे, ये सारे तथ्य इस बात को स्पष्ट करते हैं, कि हमारी परम्परा अत्यन्त समृद्ध रही है और हमने इन मन्त्र, तन्त्र, यन्त्रों के माध्यम से अद्‌भुत सफलताएं प्राप्त की हैं।

कालान्तर में हम पर विदेशी आक्रमण होते गये और हमारे उच्चकोटि के ग्रन्थ जला कर राख कर दिये, इस प्रकार हम एक समृद्ध परम्परा से वंचित हो गये, हममें वह क्षमता नहीं रही, जो कि हमारे पूर्वजों में थी।

आडम्बर वृद्धि

फिर समय बदला और लोगों ने यह महसूस किया कि बिना इन मन्त्र

तन्त्रों की सहायता से हम अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकते, इस संघर्ष में यदि हमें टिके रहना है, तो यह जरूरी है कि इन उच्चकोटि की विद्या को पुनः प्राप्त किया जाय, योग्य गुरु से भली प्रकार समझा जाय, उन सारे नियमों उप-नियमों का पालन कर इन साधनाओं में सफलता प्राप्त की जाय, जिससे कि हमारा जीवन सुखमय, उन्नतिदायक और परिपूर्ण हो।

परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि ऐसी स्थिति में श्रेष्ठ मन्त्र मर्मज्ञ प्रकाश में नहीं आये, जिसको ज्ञान है वे स्वान्तः सुखाय पद्धति में विश्वास करते हैं और हिमालय के उन स्थानों पर तपस्यारत हैं, जहां आम आदमी का जाना सम्भव नहीं है, जो गृहस्थ जीवन में उच्चकोटि के अध्येता हैं, वे अपनी ही साधना में लीन हैं, उन्हें स्वार्थ का, छल-कपट का ज्ञान नहीं है, इसकी अपेक्षा नकली चमक-दमक वाले साधु-सन्तों और सन्यासियों की भीड़ एकत्र हो गई, जो आडम्बर से तो परिपूर्ण थे, लेकिन उनमें ठोस ज्ञान का सर्वथा अभाव था, सामान्य जन श्रेष्ठ और नकली साधु-सन्तों में भेद या अन्तर नहीं कर पाता, फलस्वरूप वे कई स्थानों पर धोखे के शिकार हुए और इस प्रकार धीरे-धीरे जब उनका कार्य सम्पन्न नहीं हुआ तो उनका विश्वास डगमगाने लगा, उन्हें आशंका होने लगी कि क्या ये मन्त्र तन्त्र वास्तविक हैं भी या नहीं ? और इस प्रकार के विचारों ने उनकी आस्था की नींव हिला दी थी।

परन्तु नकली चमक-दमक के बीच में ऐसे भी साधु, योगी या गृहस्थ गुरु विद्यमान रहे, जो निःस्वार्थ भाव से अपने रास्ते पर निरन्तर गतिशील बने रहे, चमक दमक को देखने के बाद भी वे उस नकली जमात में नहीं मिले जो स्वार्थ पर आधारित थी, क्योंकि उनके पास ठोस ज्ञान था एक समृद्ध परम्परा थी, जिसके माध्यम से असम्भव कार्य को भी सम्भव किया जा सकता था, जब सामान्य जनता उन नकली लोगों से ऊब गई तो उन्हें अपनी गलती महसूस हुई और वे इस खोज में लगे कि हमारे पूर्वजों की यह समृद्ध परम्परा गलत नहीं हो सकती, अवश्य ही इन नकली लोगों में ही त्रुटि है या इन्हें इस सम्बन्ध में पूरा ज्ञान नहीं है, जिससे कि मनोकामना सिद्धि हो सके।

प्रामाणिक मार्गदर्शन

इस खोज में उनकी प्रामाणिक साधकों और सिद्धों से भेंट हुई, अपने समाज में भी ऐसे गृहस्थ लोगों से उनका मिलना हुआ, जो इस प्रकार की विद्याओं को जानते थे, वे ऐसे गुरु की शीतल छाया में बैठ कर प्रसन्नता अनुभव

करने लगे, जिनके पास ठोस ज्ञान था और जिनसे बहुत कुछ प्राप्त हो सकता था, उन्होंने देखा कि ऐसे लोग स्वार्थी नहीं है, छल-कपट का उन्हें भान नहीं है, यदि उनसे कुछ प्राप्त हो सकता है तो सेवा के द्वारा ही सम्भव है और जब सेवा के द्वारा कुछ प्राप्त हुआ तो वह 'कुछ' भी अपने आप में अद्वितीय था, अप्रतिमेय था।

पग-पग पर समस्याएं

आज का मानव इतना अधिक जटिल हो गया है, कि उसकी समस्याओं का कोई अन्त ही नहीं है, आगे बढ़ने में उसे पग-पग पर कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिससे उसकी प्रगति अवरुद्ध हो जाती है, आर्थिक समस्या, पुत्र न होने की समस्या, पुत्र प्राप्त होने पर भी कुपुत्र होने की समस्या, दुराचारी पत्नी की समस्या, पति-पत्नी में अनबन की समस्या, शत्रु भय समस्या, व्यर्थ में मुकदमे और बाधाओं की समस्या, रोजी की समस्या, व्यापार प्रारम्भ न होने की समस्या, व्यापार वृद्धि की समस्या, विभिन्न रोगों से ग्रसित होने की समस्या, मानसिक चिन्ता दूर न होने की समस्या, पुत्री के लिए उपयुक्त वर न मिलने की समस्या, पुत्री के विवाह होने के बाद उसके वैवाहिक जीवन सुखी न होने की समस्या, नौकरी की समस्या, प्रमोशन की समस्या, घर में सुख शान्ति की समस्या, अधिकारियों में मतभेद होने की समस्या, आर्थिक समस्या मकान न बन पाने की समस्या, वाहन अभाव की समस्या, आकस्मिक मृत्यु की समस्या, भाग्योदय न होने की समस्या, जरूरत से ज्यादा कर्जा बढ़ जाने की समस्या, समय पर उच्च सम्मान प्राप्त न होने की समस्या, भूत प्रेत, पिशाच बाधा घर में सुख-शान्ति न रहने की समस्या, और इस प्रकार की सैंकड़ों हजारों समस्याएं हैं, जिनसे पग-पग पर व्यक्ति को जूझना पड़ता है और उसका अत्यधिक श्रम और शक्ति इन्ही समस्याओं के हल करने में लग जाती है।

इन समस्याओं का समाधान सामाजिक कार्यों के माध्यम से सम्भव नहीं है, इनके लिए कुछ आधार या कुछ ऐसी विद्याओं की जरूरत है, जो गुढ़ विद्याएं कही जाती हैं, इन विद्याओं के अन्तर्गत मन्त्र-यन्त्र साधना-उपासना, पूजा-पाठ, मन्त्र जप आदि जरूरी है।

अभी तक ये सारे कार्य एक विशेष पंडित वर्ग ही सम्पन्न करता था, परन्तु धीरे-धीरे इन पंडितों के स्तर में भी न्यूनता आ गई उनकी आगे की पीढ़ी इतनी योग्य न हो सकी, जो दूसरे लोगों की समस्याओं को इन विद्याओं के माध्यम से

दूर कर सके, तब वे व्यक्ति अपने गुरु के समीप बैठ कर उन उपायों की खोज करने लगे, जिसके माध्यम से वे स्वयं इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न कर समस्याओं से मुक्ति पा सकें।

इस पुस्तक में पूर्ण प्रामाणिक तरीके से उन साधनाओं को स्पष्ट किया है जो हमारे ऋषियों के आशीर्वाद से प्राप्त है, जिनका उपयोग हमारे पूर्वज सैकड़ों वर्षों से करते आ रहे हैं, इनके माध्यम से उन्होंने आश्चर्यजनक सफलताएं प्राप्त की हैं, इस पुस्तक में जो भी साधनाएं दी गयी हैं, वे अपने आप में पूर्ण हैं, प्रामाणिक हैं और स्पष्ट हैं, इन साधनाओं को कोई व्यक्ति सम्पन्न कर अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकता है, इसके लिए अब पंडितों का मुंह ताकने की जरूरत नहीं रही है, परन्तु किसी भी प्रकार की साधना या उपासना के कुछ निश्चित नियम होते हैं और बिना उन नियमों के पालन किये साधना में सफलता सम्भव नहीं होती, इसलिए साधक को चाहिए कि वे किसी प्रकार की साधना में बैठने से पूर्व इन नियमों का भली प्रकार से पालन करें।

साधना में मान्य नियम

१–इस पुस्तक में जो भी साधनाएं दी हुई हैं, उन साधनाओं को कोई भी गृहस्थ सम्पन्न कर सकता है, इसके लिए कोई विशेष वर्ग या जाति का कोई बन्धन नहीं है, जिसको भी इस प्रकार की साधनाओं में आस्था हो, वह इन साधनाओं को सम्पन्न कर सकता है।

२–इस प्रकार की साधना में पुरुष या स्त्री, विवाहित या अविवाहित का कोई भेद नहीं है, कोई भी इस प्रकार की साधना सम्पन्न कर सकता है। परन्तु महिलाओं के लिए रजस्वला-समय किसी भी प्रकार की साधना के लिए वर्जित है, जिस दिन रजस्वला हो उस दिन से अगले पांच दिनों तक वह किसी भी प्रकार की साधना या पूजा अनुष्ठान सम्पन्न न करे, परन्तु यदि उसने अनुष्ठान प्रारम्भ कर दिया हो और बीच में रजस्वला हो गयी हो तो उस अनुष्ठान या साधना को पांच दिनों के लिए बीच में छोड़ दे और छठे दिन स्नान कर सिर को धो, पवित्र होकर पुनः साधना या अनुष्ठान प्रारम्भ कर सकती है, ऐसा होने पर साधना में व्यवधान नहीं माना जाता, पीछे जहां तक साधना की है, या जितनी जप संख्या कर दी है, उसके आगे की गणना की जा सकती है।

३–प्रत्येक साधना की जप संख्या दिनों की संख्या निश्चित होती है, जब तक

साधना चलती रहे. इस अवधि में साधक को चाहिए कि वह एक समय भोजन करे और सात्विक आहार ग्रहण करे, मांस, शराब, प्याज, लहसुन आदि वर्जित है, भोजन का साधना से सीधा सम्बन्ध है, अतः शुद्ध खान-पान के मामले में सतर्कता बरते, होटल में खाना यथा सम्भव टालें, क्योंकि वहां पर शुद्धता का पूरा ध्यान नहीं रह पाता, जो कि इस कार्य के लिए आवश्यक होता है।

४–साधना समय में किसी भी प्रकार की वस्तु खाना या सेवन करना अनुकूल नहीं है, मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पूर्व दूध चाय या भोजन ले सकता है, या मन्त्र जप पूरा होने के बाद वह इस प्रकार का भोज्य पदार्थ स्वीकार कर सकता है. जब मन्त्र जप चालू हो तब दूध, चाय जल पीना वर्जित है, यदि ऐसी स्थिति आ भी जाय, तो इसके बाद स्नान करके पुनः मन्त्र जप प्रारम्भ करना चाहिए।

५–साधनाकाल में यथासम्भव भूमि पर सोना उचित रहता है. भूमि पर किसी भी प्रकार का बिछौना बिछाकर सो सकता है, विशेष परिस्थितियों में वह पलंग आदि का उपयोग कर सकता है, परन्तु जहां तक सम्भव हो भूमि शयन ही करे।

६–साधनाकाल में स्त्री संसर्ग सर्वथा वर्जित है, अतः इस अवधि में पूरी तरह से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे, इस अवधि में फिल्मी पत्रिकाएं पढ़ना, सिनेमा देखना, अन्य स्त्रियों से लम्बी बातचीत करना, आदि निषेध है, यथा सम्भव मन को संयत और शांत बनाये रखें।

७–साधना प्रारम्भ करने से पूर्व स्नान कर लेना उचित रहता है, यदि बीमार हो या अशक्त हो तो ऐसी परिस्थिति में कपड़ा भिगोकर पूरे शरीर को पोंछ लेना चाहिए, परन्तु जहां तक हो सके स्नान करना ही उत्तम माना जाता है।

८–पेन्ट, निकर या पायजामा पहन कर साधना नहीं की जा सकती, इसके लिए धोती पहनना उचित माना गया है, साधना या मन्त्र जप में धोती के नीचे कच्छा पहिनना निषेध है, दूसरे शब्दों में सिले हुए वस्त्र साधना काल में नहीं पहिनने चाहिए।

९–एक धोती कमर के नीचे पहिन ले और धोती ओढ़ ले, परन्तु यदि सर्दी का मौसम हो तो ऊनी कम्बल ओढ़ सकते है, धोती हमेशा धुली हुई स्वच्छ हो।

१०–साधना काल में क्षौर कर्म नहीं करवाना चाहिए, अर्थात् सिर के या दाढ़ी के बाल नहीं कटावे।

११–साधना काल में बीड़ी-सिगरेट, तम्बाकू, पान आदि का सेवन वर्जित है, जितने दिन तक साधना चले उतने दिनों तक किसी प्रकार का व्यसन न करे।

१२–साधना काल में स्नान करते समय साबुन का प्रयोग किया जा सकता है, परन्तु इत्र आदि का प्रयोग न करे, साधना के बाद कहीं पर भी बाहर जाते समय जूतों का प्रयोग कर सकता है।

१३–यदि साधक नौकरी या व्यापार कर रहा हो और रात्रि कालीन साधना हो तो दिन में वह नौकरी पर जा सकता है, फिर भी यदि साधना पूरी होने तक वह व्यापार अथवा नौकरी से अवकाश ले लें, तो ज्यादा उचित रहता है।

१४–साधना काल में सिनेमा देखना या किसी राग-रंग, गायन संगीत महफिल आदि में भाग लेना वर्जित है।

१५–साधना काल में कम से कम बोले, बहुत अधिक आवश्यक होने पर ही बातचीत करे और उतनी ही बात चीत करे, जितनी जरूरी है, व्यर्थ में गप्पे लगाना बहस करना सर्वथा वर्जित है।

१६–साधना घर के एकान्त कक्ष में, किसी मन्दिर, नदी तट आदि स्थान पर जाकर की जा सकती है, पर इस बात का ध्यान रखे कि साधना स्थल ऐसा हो जो शांत और कोलाहल से दूर हो वह स्थान ऐसा होना चाहिए, जहां किसी प्रकार का व्यवधान उपस्थित न होता हो।

१७–साधना प्रारम्भ करने से पूर्व साधना सम्बन्धी सारे उपकरण चित्र, यन्त्र, माला आदि एक स्थान पर एकत्र कर लेनी चाहिए, पूजन सामग्री की व्यवस्था भी पहले से ही कर लेनी चाहिए, साथ ही साथ अपने गुरु या साधना बताने वाले व्यक्ति से साधना सम्बन्धी सारे तथ्य पहले से ही भली प्रकार समझ लेने चाहिए।

१८–कभी-कभी साधना काल में आंखों के सामने कई अजीबोगरीब दृश्य दिखाई पड़ते है, कई बार विचित्र आवाजें सुनाई पड़ती है, कई बार ऐसा भी अनुभव होता है कि जैसे आपको कोई आवाज दे रहा हो, परन्तु इन बातों की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए और बराबर अपनी साधना में लगे रहना चाहिए।

१९–साधनाकाल में अपने सामने जल का लोटा भर कर रख देना चाहिए उबासी, जंभाई या अपान वायु के निकलने पर जल को कानों से स्पर्श कर लेने से यह दोष मिट जाता है, यदि बीच में लघु शंका तीव्र हो जाय तो उठ कर लघु शंका कर लेना चाहिए, पर इसके बाद पुनः स्नान कर दूसरी धोती पहिन कर ही साधना में बैठना चाहिए।

२०–साधनाकाल में माला अपने हाथ से गिरनी नहीं चाहिए, इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखे, यदि गिर जाय तो पुनः प्रारम्भ से मन्त्र जप करना चाहिए ज्यादा अच्छा यह होगा कि गोमुखी (माला रखने का वस्त्र) में माला रख कर मन्त्र जप करना चाहिए, जिससे कि माला गिरने की समस्या नहीं रहे, यह गोमुखी किसी भी प्रकार के कपड़े की हो सकती है।

२१–किसी भी प्रकार की साधना या मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पूर्व दीक्षित होना जरूरी है, क्योंकि दीक्षा प्राप्त साधक ही अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है, इसके बाद साधना प्रारम्भ की जाय तो सबसे पहले एक माला गुरु मन्त्र की जप कर, गुरु की पूजा कर उनके सामने निवेदन कर मन्त्र जप प्रारम्भ करना चाहिए, ऐसा क्रम नित्य रखना चाहिए, जिससे कि अप्रत्यक्ष रूप से गुरु सहायक बने रहें।

२२–मन्त्र जप के बीच में कैसी भी परिस्थिति आ जाय, उठना नहीं चाहिए, किसी से बातचीत होठों या संकेतों से नहीं करना चाहिए, यदि ऐसी परिस्थिति आ भी जाय तो उठ कर स्नान कर वस्त्र बदल कर पुनः साधना में बैठे।

२३-साधना में साधक को पूरा विश्वास और श्रद्धा होनी चाहिए, बिना आस्था, विश्वास के कोई भी साधना सफल नहीं हो सकती।

२४–साधक सर्वथा शान्त बना रहे, किसी भी प्रकार का सन्देह मन में नहीं लावे और न उग्रता अथवा क्रोध ही प्रदर्शित करे, साधना की अवधि में अशुद्ध भाषण न करे, असत्य न बोले और कोई ऐसा कार्य न करे जो नीति के विरुद्ध हो, पूरी निष्ठा और गुरु आशीर्वाद लेकर साधना में प्रवृत्त होने से निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

ये किसी भी प्रकार की साधना के आधारभूत तथ्य हैं, जो साधक को अपनाने चाहिए, ऐसा करने पर उसे सफलता स्वाभाविक रूप से मिल जाती है।

आगे के पृष्ठों में मैं उन साधनाओं को दे रहा हूं, जो विभिन्न स्रोतों से प्राप्त हुई हैं, ये साधनाएं उच्चकोटि के महात्माओं, ऋषियों एवं साधकों से प्राप्त हुई हैं, जो इस क्षेत्र में अग्रगण्य रहे हैं और जिनके जीवन का अधिकांश समय इस प्रकार की साधनाओं में ही व्यतीत हुआ है।

साथ ही साथ ये सभी साधनाएं साधकों ने अपने जीवन में अपनाई हैं और इसके आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं, उन्होंने इन साधनाओं को कसौटी पर कसा है और वे पूरी प्रामाणिक सिद्ध हुई हैं, इसलिए सभी साधनाएं प्रामाणिक हैं।

मुझे विश्वास है, यदि साधक पूरी आस्था और प्रामाणिकता के साथ इन सब साधनाओं को सम्पन्न करेंगे, तो उन्हें निश्चित समय में ही अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकेंगे।

१—कल्याणदायक गणपति प्रयोग

सामग्री-जलपात्र, लाल पुष्प, गणपति की मूर्ति या चित्र, सुगन्धित अगरबत्ती, शुद्ध घृत का दीपक।

माला-मूंगे की माला, या रक्त चन्दन की माला।

समय-दिन का कोई भी समय।

आसन-लाल रंग का सूती या ऊनी आसन।

दिशा-पूर्व दिशा (साधक पूर्व की तरफ मुंह करके बैठे)

जप संख्या-सवा लाख।

अवधि-पांच दिन, ग्यारह दिन या इक्कीस दिन।

मन्त्र ।। गं गणपतये नमः ।।

प्रयोग-साधक किसी भी बुधवार से यह साधना प्रारम्भ कर सकता है, यह प्रयोग जीवन में कल्याण कामना के लिए किया जाता है, घर में विवाह कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हो जाय, घर में सुख शान्ति रहे या किसी कार्य में

विघ्न न आवे, इसके लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है।

बुधवार के दिन प्रातः स्नान कर, सामने गणपति की मूर्ति या चित्र को स्थापित कर, उसका सामान्य पूजन करे और इसके बाद सम्बन्धित मन्त्र का जाप प्रारम्भ कर दे, जितने दिन में यह साधना सम्पन्न करनी हो, उसी अनुपात में नित्य मन्त्र जप सम्पन्न करे।

साधना समाप्त होने पर किसी ब्राह्मण-पुत्र या कुंआरी कन्या को भोजन कराकर उसे दक्षिणा, वस्त्र आदि भेंट स्वरूप प्रदान करे, और वह गणपति का विग्रह या मूर्ति अपने पूजा स्थान में या घर में स्थापित कर दे, ऐसा करने पर निकट भविष्य में होने वाला कार्य बिना किसी बाधा के सम्पन्न होता है और किसी प्रकार का कोई विघ्न उपस्थित नहीं होता।

२— मनोकामना सिद्धि प्रयोग

सामग्री—श्वेत आक से निर्मित गणपति का विग्रह (श्वेत आक को कहीं-कहीं सफेद आकड़ा भी कहते हैं।) जलपात्र, लाल चन्दन, कनेर के पुष्प, केसर, अगरबत्ती, शुद्ध घृत का दीपक आदि।

माला–मूंगे की माला, या रक्त चन्दन की माला।

समय–दिन का कोई भी समय।

आसन–लाल रंग का सूती या ऊनी आसन।

दिशा–पूर्व दिशा।

जप संख्या–सवा लाख

अवधि–पांच दिन।

मन्त्र– ।। ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा ।।

प्रयोग—किसी भी बुधवार से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है, इसमें जो भी इच्छा या मनोकामना होती है, वह इस साधना के बाद अवश्य ही पूरी होती है।

सफेद आक के गणपति अत्यन्त ही दुर्लभ माने जाते हैं और कहा जाता है, कि जिसके घर में सफेद आक के गणपति स्थापित होते हैं, उसके घर में किसी प्रकार का कोई अभाव या न्यूनता नहीं रहती।

बुधवार के दिन प्रातःकाल श्वेतार्क गणपति की मूर्ति को जल से स्नान कराकर उस पर केसर लगावे, फिर उसको रक्त चन्दन का तिलक करे, तथा सामने गुड़ का भोग लगावे, इसके बाद सम्बन्धित मन्त्र का जप प्रारम्भ करे।

साधना समाप्त होने पर श्वेतार्क गणपति विग्रह को अपने पूजा स्थान में या तिजोरी में स्थापित कर दे, साधना काल में नित्य पूजन करते समय उन पर पांच पुष्प चढ़ावे और प्रत्येक पुष्प चढ़ाते समय अपनी मनोकामना व्यक्त करे कि मैं अमुक उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह साधना कर रहा हूं, यदि सम्भव हो तो पांच कनेर के पुष्प चढ़ावें, परन्तु कनेर के पुष्प सुलभ न हों तो किसी भी प्रकार के लाल पुष्प चढ़ा सकते हैं।

साधना समाप्त होने पर किसी बालक को गुड़ की बनी वस्तु का भोजन करावे और उसे दक्षिणा दे, ऐसा करने पर कुछ ही दिनों में व्यक्ति की मनोकामना निश्चय ही पूरी होती है।

३—विजय गणपति प्रयोग

सामग्री—धातु से निर्मित मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त 'विजय गणपति की मूर्ति

(विग्रह) जलपात्र, लाल चन्दन, कनेर के पुष्प, अगरबत्ती, शुद्ध घृत का दीपक आदि।

माला-मूंगे या रक्त चन्दन की माला।

समय–दिन का कोई भी समय

आसन–लाल रंग का सूती या ऊनी आसन।

दिशा–पूर्व दिशा।

जप संख्या–सवा लाख।

अवधि-पांच दिन।

मन्त्र- ।। ॐ वर वरदाय विजय गणपतये नमः ।।

प्रयोग-यह साधना किसी भी बुधवार को प्रारम्भ की जा सकती है, मुकदमे में सफलता प्राप्त करने या किसी समस्या पर विजय प्राप्त करने के लिए यह अचूक प्रयोग है, किसी भी समस्या को सफलता पूर्वक सम्पन्न करने के लिए इस साधना को किया जाता है।

इसके लिए विशेष मन्त्रों से मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त 'विजय गणपति' के विग्रह को बुधवार के दिन प्रातःकाल स्नान कराकर उस पर केशर लगावे, तथा उसे रक्त चन्दन से तिलक करे, सामने गुड़ का भोग लगावे और इक्कीस पुष्पों से उसका पूजन करे, यथा सम्भव ये पुष्प कनेर के हों तो ज्यादा उचित रहता है, पर यदि कनेर के पुष्प उपलब्ध न हों तो किसी भी प्रकार के लाल रंग के पुष्प प्रयोग में लिए जा सकते हैं, प्रत्येक पुष्प चढ़ाते समय जिस कार्य में विजय प्राप्त करनी है, उसको बोल कर पुष्प चढ़ावे।

इसके बाद मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे और जब पांच दिनों में सवा लाख मन्त्र जप पूरा हो जांय, तब छठे दिन कुंआरी कन्याओं को भोजन करावे और उन्हें यथोचित भेंट दे, ऐसा करने पर कुछ ही दिनों में व्यक्ति जिस कामना के लिए साधना करता है, वह कामना या विजय अवश्य ही प्राप्त होती है, यह प्रयोग अत्यन्त ही श्रेष्ठ और सिद्ध है।

४—सर्वसिद्धिदायक प्रयोग

सामग्री—जलपात्र, पुष्प, मूंगा लगभग तीन रत्ती का अगरबत्ती, शुद्ध घृत, का दीपक आदि।

माला—मूंगे की माला।

समय—रात्रि के नौ बजे के बाद।

आसन—किसी भी प्रकार का आसन

दिशा–उत्तर दिशा।

अवधि-पांच दिन।

जप संख्या–सवा लाख।

मन्त्र– ।। ॐ ह्रीं श्रीं मानस सिद्धिकरी ह्रीं नमः ।।

प्रयोग – साधक किसी भी वार को यह प्रयोग प्रारम्भ कर सकता है, यह रात्रि का प्रयोग है, अतः रात्रि के लगभग नौ बजे के बाद स्नान कर आसन पर बैठ जाय, सामने एक सफेद वस्त्र बिछा कर उस पर चावलों की ढेरी रख कर उस पर मूंगा रत्न रख दे. इस रत्न को पहले से ही खरीद लेना चाहिए, जीवन में सभी प्रकार की सिद्धि एवं सफलता के लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है, इस मन्त्र जप में किसी मूर्ति या चित्र की आवश्यकता नहीं होती, मन्त्र जप करते समय मूंगे पर आपका ध्यान या आपकी दृष्टि केन्द्रित रहनी चाहिए।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तो छठे दिन उस मूंगे को सोने या चांदी की अंगूठी में जड़वा कर धारण कर लेना चाहिए, यह अंगूठी किसी भी हाथ की उंगली में धारण की जा सकती है, इसको उतारने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यह रात्रि को सोते समय या शौचादि कार्यों से निपटते समय अपवित्र नहीं होती यों उतारने में कोई बाधा भी नहीं है।

इसके बाद आप स्वयं अनुभव करेंगे कि जीवन में स्वतः ही समस्याएं सुलझ रही है. तथा जीवन में सफलताएं प्राप्त हो रही है।

५—सर्व विघ्न नाशक प्रयोग

सामग्री—जलपात्र, ताजा बना हुआ थोड़ा सा हलवा, तेल का दीपक, लोबान धूप आदि।

माला–मूंगे की माला।

समय–रात्रि का कोई भी समय।

आसन–किसी भी प्रकार का हो सकता है।

दिशा-दक्षिण दिशा।

जप संख्या–नित्य एक हजार।

अवधि–पांच दिन।

मन्त्र— ॥ ॐ अरण्य देवाय विघ्न विनाशाय फट् स्वाहा ॥

प्रयोग—यह साधना शनिवार से प्रारम्भ होती है, इसमें नित्य रात्रि को गेहूं के आटे में तेल और गुड़ मिलाकर थोड़ा हलवा बना लेना चाहिए, और दक्षिण दिशा की तरफ मुंह कर रात्रि में किसी भी समय उपरोक्त मन्त्र का मात्र एक हजार जप करना चाहिए, जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो साधक स्वयं उस हलवे को और साथ में जलपात्र, ले जाकर चौराहे पर रख दे, और उसके चारों तरफ पानी का घेरा बना दे, फिर खाली जलपात्र, लेकर घर वापस आ जाय, पीछे घूमकर नहीं देखे, वापस आकर स्नान कर अपने दैनिक कार्य में लग सकता है।

इस प्रकार पांच रात्रि को प्रयोग किया जाता है, इसके बाद और अन्य कोई विशेष विधि-विधान करने की जरूरत नहीं है, ऐसा करने से निकट भविष्य में आने वाली सारी बाधाएं समाप्त हो जाती है, और विघ्न स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं।

६—ऋद्धि सिद्धि दायक प्रयोग

सामग्री—जलपात्र, गुलाब या अन्य किसी भी प्रकार के पुष्प, श्री यन्त्र, (जो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो) अगरबत्ती, शुद्ध घृत का दीपक आदि।

माला–कमल गट्टे की माला।

समय–रात्रि के नौ बजे के बाद कोई भी समय।

आसन–सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा–उत्तर दिशा।

जप संख्या-सवा लाख।

अवधि-पांच दिन या ग्यारह दिन।

मन्त्र— ।। ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे लक्ष्मीदायिनी सर्व कार्य सिद्धि करि करि ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्यै नमः ।।

प्रयोग— यह साधना किसी भी बुधवार से प्रारम्भ की जाती है, सामने मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'श्री यन्त्र' सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर स्थापित कर दे और उसे जल से स्नान कराकर उस पर केसर लगा दे, इसके बाद अगरबत्ती व दीपक लगाकर उपरोक्त मन्त्र का जप करे।

जब जप संख्या पूरी हो जाय तो किसी एक कुंआरी कन्या को भोजन कराकर उसे यथोचित वस्त्र, आदि भेंट करे, और फिर वह श्री यन्त्र अपनी दुकान में, गल्ले में या अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित करे तो जब तक वह श्री यन्त्र स्थापित रहेगा, तब तक घर में या व्यापार में ऋद्धि सिद्धि बनी रहेगी।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूल है और इससे उन्नति होती रहती है।

७—दरिद्रता नाशक लक्ष्मी प्रयोग

सामग्री—जलपात्र, तेल का दीपक, लोबान धूप।

माला-मूंगे की माला।

समय-दिन का कोई भी समय।

आसन-लाल रंग का सूती आसन।

दिशा-उत्तर दिशा।

जप संख्या-नित्य ग्यारह सौ।

अवधि-पांच दिन।

मन्त्र— ।। अल्लाह मुहम्मदीन अलासाले मुहम्मददीन वारिक वसल्लम ।।

प्रयोग—यह मुसलमानी प्रयोग है, और किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ किया जाना चाहिए, प्रातःकाल उठकर किसी से बातचीत करने से पूर्व हाथ मुंह धोकर आसन पर बैठ जाय और सामने तेल का दीपक व लोबान, धूप, लगा दे, फिर पहले एक सौ एक बार "बिसमिल्लाह" कहे, इसके बाद उपरोक्त मन्त्र का ग्यारह सौ बार जप करें, जप पूरा करने के बाद स्नान कर अपने दैनिक कार्य में लग जाय, इस प्रकार पांच दिन यह प्रयोग करे, इस बात का ध्यान रखे कि मन्त्र जप पूरा होने के बाद ही किसी से बात चीत करे।

इस प्रकार पांच दिन प्रयोग करने से घर की दरिद्रता समाप्त हो जाती है, और जीवन में आर्थिक उन्नति होने लगती है।

८—नौकरी प्राप्त करने का प्रयोग

सामग्री–जलपात्र, तेल का दीपक, लोबान धूप आदि।

माला–मूंगे की माला।

समय–दिन का कोई भी समय।

आसन–किसी भी प्रकार का आसन।

दिशा–पूर्व दिशा।

जप संख्या–नित्य ग्यारह सौ।

अवधि–चालीस दिन।

मन्त्र– ।। या मुहम्मद दीन हजराफील महक अल्लाह हो ।।

प्रयोग—यह मुसलमानी प्रयोग है, और किसी भी शुक्रवारको किया जाना चाहिए, प्रातःकाल उठकर व्यक्ति बिना किसी से बातचीत किये, सवा पाव उड़द के आटे की एक रोटी बनावे, और उसे आंच पर अपने हाथों से सेंके, इसके बाद नमाज पर उस रोटी के चार टुकड़े करके रख दे, उसमें से एक टुकड़े के पुनः छोटे-छोटे ग्यारह टुकड़े बनावे, और उनको सामने रख कर उपरोक्त मन्त्र का जप पूरा करे, जब ग्यारह सौ मन्त्र जप पूरा हो जाय, तो वे छोटे-छोटे टुकड़े नदी या तालाब में ले जाकर डाल दे, जिससे कि मछलियां उनको खा जांय, शेष रोटी के जो तीन भाग बचेंगे, उनमें से एक भाग कुत्ते को खिला दे, तीसरा भाग कौवों को खिला दे और चौथा भाग रास्ते पर फेंक दे, इस प्रकार चालीस दिन तक नित्य प्रयोग करे, तो उसे मनोवांछित नौकरी या रोजी प्राप्त होती है, और आगे के जीवन में किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं आती।

६—सर्व उपद्रव नाशक प्रयोग

सामग्री–जलपात्र, तेल का दीपक, हनुमान का चित्र या मूर्ति, किसी भी प्रकार की धूप और गुड़ आदि।

माला–मूंगे की माला।

समय–रात्रि का कोई भी समय।

आसन–लाल वस्त्र का कोई भी आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–नित्य इक्कीस सौ मन्त्र।

अवधि–ग्यारह दिन।

मन्त्र– ॥ ॐ घण्टाकर्णो महावीर सर्व उपद्रव नाशनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

प्रयोग—रात्रि को स्नान कर लाल धोती पहन कर आसन पर बैठ जाना चाहिए और सामने हनुमान जी की मूर्ति या चित्र लाल वस्त्र बिछाकर रख देना चाहिए, सबसे पहले उसे स्नान कराकर सिंदूर का तिलक लगाना चाहिए और फिर उनके सामने गुड़ का भोग लगाकर उपरोक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

यह ग्यारह दिन का प्रयोग है, जब प्रयोग समाप्त हो जाय तो बारहवें दिन किसी अविवाहित बालक को भोजन कराकर उसे लाल वस्त्र दान में दे, ऐसा करने से यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है और यदि घर में भूत-प्रेत, पिशाच आदि का प्रकोप हो, या घर में उपद्रव होते हों अथवा घर में असन्तोष, लड़ाई-झगड़ा, मार-पीट, कलह आदि होते हों, तो इस प्रयोग से ये सारी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं।

प्रयोग समाप्त होते ही हनुमान जी के चित्र या मूर्ति को पूजा स्थान में या घर में किसी शुभ स्थान में रख देनी चाहिए, हनुमान जी को जो नित्य भोग लगाया जाता है, वह दूसरे दिन छोटे-छोटे बालकों में वितरित कर देना चाहिए।

यह प्रयोग सिद्ध एवं सफल प्रयोग है और इससे घर के कलह मिटकर सुख-शांति स्थापित होती है।

१०–पितृ दोष निवारण प्रयोग

सामग्री—जलपात्र, घृत का दीपक, लघु नारियल, अगरबत्ती तथा दूध की बनी मिठाई का भोग इच्छानुसार।

माला–मूंगे की माला।

समय–दिन का कोई भी समय।

आसन–किसी भी प्रकार का आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–नित्य ग्यारह सौ मन्त्र जप।

अवधि–ग्यारह दिन।

मन्त्र–॥ ॐ श्रीं सर्व पितृ दोष निवारणाय क्लेशं हन हन सुख-शांति देहि देहि फट् स्वाहा॥

प्रयोग—शनिवार के दिन किसी भी समय स्नान कर सफेद धोती पहन कर सामने मिट्टी के एक पात्र में रेत डालकर उसमें गेहूं या किसी भी प्रकार का धान बो दे, तथा नित्य इसमें थोड़ा-थोड़ा पानी डालते रहें, जिससे कि धान उग

जाय, सामने सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर चने की दाल की ढेरी बनाकर उसपर लघु नारियल स्थापित कर दे, यह लघु नारियल लगभग एक इन्च लम्बा होता है, बाजार में जो आम नारियल मिलते हैं, वे नारियल प्रयोग में नहीं लावे, इसके बाद दीपक व अगरबत्ती लगाकर उपरोक्त मन्त्र का जप करे, नित्य दूध का बना प्रसाद भोग लगावे और नित्य मन्त्र जप के बाद पश्चिम दिशा की तरफ वह भोग फेंक दे।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक प्रयोग करे और जिस पात्र में धान बोया था, उस पात्र में थोड़ा-थोड़ा पानी डालते रहें, इस प्रकार जब प्रयोग समाप्त हो जाय तब बारहवें दिन उस मिट्टी के पात्र को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दे और वह लघु नारियल अपने घर के पूजा स्थान में रख दे।

इस प्रकार करने से किसी भी प्रकार का पितृ दोष समाप्त हो जाता है, और घर में सुख शांति स्थापित हो जाती है।

११–व्यापार द्वारा धन प्राप्ति प्रयोग

सामग्री—जलपात्र, घृत का दीपक, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त धातु निर्मित कुबेर यन्त्र, अगरबत्ती तथा किसमिस (दाख)।

माला—स्फटिक माला।

समय—रात्रि का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा—उत्तर दिशा।

जप संख्या—सवा लाख

अवधि—पांच, ग्यारह या पन्द्रह दिन।

मन्त्र ॥ ॐ ह्रीं श्री क्रीं श्रीं क्लीं श्रीं कुबेराय अष्ट लक्ष्मी मम गृहे धनं पूरय पूरय नमः ॥

प्रयोग—रात्रि को किसी भी समय स्नान कर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर कुबेर यन्त्र स्थापित कर दे और उसे जल से स्नान कराकर केसर, पुष्प आदि

से पूजा करे, तथा अगरबत्ती दीपक लगा ले, इसके बाद उपरोक्त मन्त्र का जप करे, कुबेर यन्त्र के सामने चार दाने किसमिस का भोग लगा दे, जो दूसरे दिन बालकों में वितरित कर दे।

इस प्रकार जब यह प्रयोग सम्पन्न हो जाय, तब उस कुबेर यन्त्र को अपनी दुकान या कार्यालय में स्थापित कर दे, ऐसा करने से कुबेर सिद्ध हो जाते हैं और आश्चर्यजनक रूप से व्यापार में वृद्धि होने लगती है, इस प्रयोग से दरिद्रता का नाश हो जाता है और यदि व्यापार नहीं चल रहा हो, या सही प्रकार से बिक्री नहीं हो रही हो, या उसमें किसी प्रकार की अड़चनें आ रही हों, तो इस प्रयोग से वह समाप्त हो जाती है।

१२–व्यापार-बन्ध दूर करने का प्रयोग

सामग्री–गुलाल, गोरोचन, छारछबीला और कपूर काचरी।

माला– मूंगे की माला

समय–दिन या रात्रि का कोई भी समय।

आसन–लाल ऊनी।

दिशा– पश्चिम की ओर।

जप संख्या–तीन माला प्रतिदिन।

अवधि–पांच दिन।

मन्त्र– ॥ ॐ दक्षिण भैरवाय भूत प्रेत बन्ध, तन्त्र बन्ध, निग्रहनी सर्व शत्रु संहारिणी कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॥

प्रयोग–उपरोक्त चारों चीजों को बराबर मात्रा में लेकर उन्हें पीस कर मिलाकर रख लेना चाहिए और दिन या रात्रि को किसी भी समय उपरोक्त मन्त्र का इक्कीस बार उच्चारण करते हुए, यह मिला- जुला पाउडर दुकान के सामने बिखेर देना चाहिए, इस प्रकार पांच दिन प्रयोग करने से व्यापार - बन्ध दूर हो जाता है।

यदि किसी शत्रु ने व्यापार को रोकने या व्यापार में नुकसान होने या

दुकान में ग्राहक न आवे अथवा व्यापार में उन्नति न हो, ऐसा कोई प्रयोग किया हो, तो इस प्रकार का प्रयोग करने से किया हुआ प्रयोग समाप्त हो जाता है, और पुनः व्यापार में उन्नति होने लग जाती है. किसी भी प्रकार का तन्त्र-मन्त्र आदि व्यापार से सम्बन्धित किया हुआ हो, तो इसमें अनुकूलता प्राप्त होती है।

१३-व्यापार बांधने का प्रयोग

सामग्री-हरताल, गन्धक और मैनसिल।

माला-रुद्राक्ष की माला।

समय-दिन या रात्रि का कोई भी समय।

आसन-सूती या ऊनी आसन।

दिशा-पूर्व की ओर मुंह करके।

जप संख्या-तीन माला प्रतिदिन।

अवधि-पांच दिन।

मन्त्र ।। ॐ बन्ध देवाय विघ्न राजाय फट् ।।

प्रयोग-यदि कोई व्यापारी परेशान करता हो और यदि उसका व्यापार बांधना हो, जिससे उसका व्यापार आगे न बढ़ सके और बिक्री घट जाय, इसके लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है।

उपरोक्त सामग्री को बराबर लेकर गोमूत्र में मिलाकर पतला सा घोल बना लेना चाहिए और मंगलवार के दिन या रात्रि को जाकर शत्रु की दुकान के सामने छिड़क देना चाहिए, छिड़कते समय उपरोक्त मन्त्र का तीन माला मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए, यह मंगलवार से शनिवार तक किया जाना चाहिए और इस बात का ध्यान रखें कि इसमें किसी प्रकार का नागा न हो।

ऐसा करने पर जिस दुकान के आगे यह प्रयोग किया जायेगा, उस दुकान की बिक्री घट जायेगी और व्यापार में हानि होने लग जायेगी।

द्वेष वश यह प्रयोग नहीं करना चाहिए, यदि शत्रु बहुत अधिक परेशान

कर रहा हो, हानि पहुंचाने की कोशिश कर रहा हो, तभी इस प्रकार का प्रयोग करना चाहिए।

१४–विद्या वर्धक प्रयोग

सामग्री–सरस्वती का चित्र, गोमती चक्र, जलपात्र, सुगन्धित अगरबत्ती और शुद्ध घृत का दीपक।

माला–स्फटिक माला।

समय–दिन का कोई भी समय।

आसन–सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा–पूर्व दिशा।

जप संख्या–ग्यारह सौ प्रति दिन।

अवधि–ग्यारह दिन।

मन्त्र– ।। ॐ नमो ॐ श्रीं वद वद वाग्वादिनी बुद्धि वर्द्धय ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।।

प्रयोग–यदि परीक्षा में सफलता नहीं मिल रही हो या जो कुछ याद किया जाता है, वह स्मरण नहीं रहता हो अथवा परीक्षा में जितनी मेहनत की जाती है, उसके अनुकूल परिणाम या अंक प्राप्त न होते हों, तो इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है।

सामने सफेद वस्त्र बिछा कर उस पर सरस्वती का चित्र रख दे, उसके सामने मन्त्र सिद्ध गोमती चक्र रख देना चाहिए, सरस्वती के चित्र को जल से पोंछ कर केसर का तिलक लगावे, तथा सामने अगरबत्ती व दीपक लगा दे, इसी प्रकार गोमती चक्र पर भी केसर का तिलक कर दे।

इसके बाद उपरोक्त मन्त्र का जप करे, नित्य ग्यारह सौ मन्त्र जप किया जाय, इस प्रकार ग्यारह दिन तक प्रयोग करने पर यह सिद्ध हो जाता है, बारहवें दिन गोमती चक्र को अंगूठी में जड़वा कर पहन ले, या चांदी के तावीज में डाल कर धारण कर ले अथवा नित्य अपने साथ रखे, ऐसा करके यदि छात्र परीक्षा

दे, तो उसे पढ़ी हुई विद्या याद रहती है और परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होते हैं।

१५—इन्टरव्यू में सफलता प्राप्त करने का प्रयोग

सामग्री—जल पात्र, केसर, शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती।

माला—स्फटिक मणि माला

समय—दिन का कोई भी समय।

आसन—सफेद आसन।

दिशा—पूर्व दिशा।

जप संख्या—इक्कीस बार प्रतिदिन।

अवधि—ग्यारह दिन।

मन्त्र— ॥ ॐ ह्रीं वाग्वादिनी भगवती मम कार्य सिद्धि करि करि स्वाहा ॥

प्रयोग—यह प्रयोग स्फटिक मणिमाला पर किया जाता है, सामने पीला वस्त्र बिछाकर उस पर १०८ मनकों की मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त स्फटिक मणि माला रख दे और केसर से उसका पूजन करे, फिर सामने अगरबत्ती व दीपक लगा ले, यह दीपक शुद्ध घृत का हो, फिर उपरोक्त मन्त्र का इक्कीस बार उच्चारण करे, इस प्रकार ग्यारह दिन तक करने से वह माला "विजय माला" में परिवर्तित हो जाती है।

जब किसी इन्टरव्यू या साक्षात्कार में जावे तो उस माला को कपड़े बुशर्ट अथवा कुर्ते के नीचे पहिन कर जावे, ऐसा करने पर उसे अवश्य ही साक्षात्कार में सफलता प्राप्त होती है।

१६—चोरी ज्ञात करने का प्रयोग

सामग्री—स्टील की कटोरी, एक पाव चावल' तेल का दीपक (किसी भी प्रकार का तेल हो) मुकरदन्त, लोबान धूप

माला–हकीक माला।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन—लाल रंग का सूती आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–दस हजार।

अवधि–पांच या ग्यारह दिन।

मन्त्र— ॥ ॐ नमो आदेश गुरु को, धरती बांधू आकाश बांधू लोहा वज्जर किवाड़ बांधू, पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण, धरती और आकाश बांधू, नाहरवीर उठकर ध्वजा हाथ में ले पकड़ चोर को खून गिरावे। जब तक सांच न बोले तब तक मारे अपना सा बल मोहि पर देवे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

प्रयोग–यह साबर मन्त्र प्रयोग है, किसी भी शुक्रवार से यह प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, रात को लकड़ी के तख्ते पर लाल कपड़ा बिछाकर उसपर चावलों से भरी कटोरी रख दे और उस पर शूकर दन्त रख दे, सामने तेल का दीपक लगा दे, खुद भी लाल वस्त्र पहने और उपरोक्त मन्त्र का जप करे।

जब निश्चित अवधि में मन्त्र जप पूरा हो जाय, तब यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जब कहीं चोरी का समाचार मिले, तो अपने सामने चावल की कटोरी भर कर वहीं शूकर दन्त रख दे और हकीक माला से १०८ बार उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करे, वे चावल उन लोगों को खाने के लिए दे, जिन लोगों पर चोरी का शक हो, जो चोर होगा, चावल के दाने चबाते ही उसके मुंह से खून गिरने लग जायेगा और जब तक वह चोरी नहीं कबूलेगा, तब तक उसके मुंह से खून गिरता रहेगा।

परन्तु जिसने चोरी नहीं की होगी उनको वे चावल चबाये जाने पर भी खून नहीं गिरेगा।

जब चोरी का पता लग जाय तब वे चावल किसी तालाब या नदी में डाल

दे, और शूकर दन्त घर में यथा स्थान रख दे।

१७–मुकदमे में सफलता प्राप्त करने का प्रयोग

सामग्री–कुंकुम, धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प, लोहे का टुकड़ा, थोड़ा सा दूध।

माला–हकीक माला।

समय–रात्रि का कोई भी समय।

आसन–लाल रंग का सूती आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–दस हजार।

अवधि–पांच दिन या ग्यारह दिन।

मन्त्र– ॥ या कवियो या मवियो या रकियो या नकीयो ॥

प्रयोग–यह मुसलमानी प्रयोग है और शुक्रवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ करना चाहिए, पहले कुंकुम से धरती पर गोल घेरा बना लेना चाहिए, फिर आसन बिछाकर बैठ जाय और सामने घी का दीपक लगा दे और उपरोक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे।

उस दिन जप पूरा होने पर वह लोहे का टुकड़ा दूध में डाल दे और रात भर दूध में पड़ा रहने दे, दूसरे दिन फिर उसी प्रकार कुंकुम का घेरा बनाकर वह लोहे का टुकड़ा उसमें रखकर मन्त्र जप करे, जब दस हजार मन्त्र जप पूरे हो जाय तब उस लोहे के टुकड़े को किसी लकड़ी में ठोंक दे और अपने विरोधी व्यक्ति का नाम लेकर उस पर लाल कपड़ा बांध दे और वह दूध उस कपड़े पर डाल दे, तथा वह लोहे का टुकड़ा दक्षिण दिशा की तरफ जाकर जमीन में गाड़ दे।

इस प्रकार करने पर सामने वाली पार्टी कमजोर हो जाती है और शीघ्र ही मुकदमे में सफलता मिल जाती है।

लोहे के टुकड़े को जो नैवेद्य और पुष्प चढ़ाये जाते है, वे भी उसी लोहे के टुकड़े के साथ जमीन में गाड़ दे।

इस प्रकार करने पर शीघ्र ही मुकदमे में सफलता प्राप्त होती है।

१८—सर्व कार्य साधन यन्त्र प्रयोग

सामग्री-पिसी हुई हल्दी, सफेद कपड़ा, (एक फीट लम्बा व एक फीट चौड़ा) आटे का चौमुखा दीपक, लोबान।

माला-मूंगे की माला।

समय-रात का कोई भी समय।

आसन-सफेद रंग का कोई भी आसन।

दिशा-उत्तर दिशा।

जप संख्या-एक लाख।

अवधि-पांच, ग्यारह या इक्कीस दिन।

मन्त्र- ॥ ॐ ह्रीं श्रं सहः ॥

यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	९
१४	१०	११	१
४	१०	२१	१८

प्रयोग-किसी भी रविवार को प्रयोग के लिए बैठ जाय और सामने सफेद कपड़ा बिछा दे, उस पर ऊपर दिये हुए यन्त्र को हल्दी में पानी मिला कर उस स्याही से लिख ले, इसके बाद यन्त्र पर आटे का चौमुखा दीपक रख दे, और

इसमें किसी भी प्रकार का तेल डालकर उसकी चारों बत्तियां जला दे और फिर उपरोक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे।

जब निश्चित अवधि में मन्त्र-जप पूरा हो जाय, तब उस कपड़े को जंगल में या सुनसान स्थान में जाकर जला दे, ऐसा करने पर सभी दुखों का नाश हो जाता है और सभी प्रकार के क्लेश, व्याधि, बीमारी जलकर समाप्त हो जाती है, मन्त्र-जप करते समय लोबान धूप लगा लेना चाहिए।

१६—जुए में जीतने का प्रयोग

सामग्री-पीपल के इक्कीस पत्ते, एक फीट लम्बा व एक फीट चौड़ा लाल कपड़ा, तेल का दीपक, अगरबत्ती व हीरा शंख।

माला-शंख माला।

समय-रात का कोई भी समय।

आसन-किसी भी प्रकार का आसन।

दिशा-पूर्व दिशा।

जप संख्या-एक लाख।

अवधि-पांच या ग्यारह दिन।

मन्त्र- ॥ भैरव वीर सदा सुखदाई, अनचिन्ता धन लावो भाई मेरा कार्य करो सुखदाई, तुमरो नाम बड़ो न ताई जो तु मेरा काम नहीं करे तो, चौरासी सिद्धों की दुहाई ॥

प्रयोग-यहां जुए का तात्पर्य लॉटरी या आकस्मिक धन प्राप्ति से भी है, यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ होता है, किसी भैरव मन्दिर में शुक्रवार की शाम को जावे और भैरव के सामने तेल, गुड़ तथा इत्र का फोहा चढ़ावे, इसमें किसी भी प्रकार का इत्र काम में लाया जा सकता है, यदि भैरव का मन्दिर न हो तो सुनसान स्थान पर किसी पत्थर पर सिंदूर लगाकर उसे भैरव मान लें और उसके सामने यह सामग्री चढ़ा दें, फिर घर आकर हीरा शंख के सामने उपरोक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे, जब निश्चित अवधि में मन्त्र-जप पूरा हो जाय तो वह माला सुरक्षित स्थान पर रख दे।

ऐसा करने से शीघ्र ही उसे आकस्मिक धन प्राप्त होता है और यदि वह माला पहनकर जुए में भाग लेता है, तो उसे विजय प्राप्त होती है।

२०—कैद से छुड़ाने का प्रयोग

सामग्री-गुड़ और आटा मिलाकर पुआ बनावे, कुंकुम पुष्प।

माला-मूंगे की माला।

समय-रात का कोई भी समय।

आसन-लाल रंग का कोई भी आसन।

दिशा-दक्षिण दिशा।

जप संख्या-सवा लाख।

अवधि-ग्यारह दिन।

मन्त्र- ।। ॐ हनुमत बीर, वेग वेग आवो अमुक बन्दी को बन्धन से छुड़ावो। बेड़ी तोड़ो, ताला तोड़ो, सारे बन्धन तोड़ो, मोड़ो अमुक बन्दी को बध से छुड़ावो। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

प्रयोग—जल में गुड़ भिगोकर उसके रस में गेहूं का आटा मिलाकर तवे पर पुआ बनावे, फिर उस पर बन्दी का नाम लिख दे, यह नाम कुंकुम से लिखे, रात्रि को प्रयोग करते समय सामने थाली में वह पुआ रख दे और उस पर पुष्प चढ़ावे, फिर मन्त्र-जप करे, नित्य दस हजार जप करे और मन्त्र-जप पूरा होने पर वह पुआ रात्रि को ही रास्ते पर रख दे और घर आ जाये, इस प्रकार नित्य करे, जब सवा लाख मन्त्र-जप पूरे हो जाय, तब किसी कन्या को पुए का ही भोजन करावे और उसे यथोचित द्रव्य आदि देकर सन्तुष्ट करे।

इस प्रकार यह प्रयोग करने पर जल्दी ही बन्दी कैद से छूट जाता है और उस पर किसी प्रकार की विपत्ति नहीं आती।

२१—आकर्षण प्रयोग

सामग्री तेल का दीपक, थोड़ी सी चीनी या बताशा।

माला–स्फटिक माला।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन–कोई भी आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–इक्कीस हजार।

अवधि–तीन या पांच दिन।

मन्त्र– ।। ॐ नमो वैंतालाय आदि पुरुषाय अमुकं आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा ।।

प्रयोग–रात्रि को स्नान कर आसन पर बैठ जाय और सामने तेल का दीपक लगा ले, फिर स्फटिक माला से मन्त्र - जप प्रारम्भ करे, इस मन्त्र में जहां 'अमुक' शब्द आया है, उस स्थान पर जिसको वश में करना हो उसका नाम उच्चारण करना चाहिए, सामने थोड़ी सी चीनी या बताशा या कोई भी ऐसी वस्तु रख देनी चाहिए, जो साध्य को अर्थात् जिसे वश में करना हो, उसे खिलाई जा सके।

जब इक्कीस हजार मन्त्र-जप पूरे हो जाय, तो वह वस्तु जिसे वश में करना हो, उसे खिला देने से वह तुरन्त वश में हो जाता है और भविष्य में जैसी आज्ञा दी जाती है, उसी के अनुसार कार्य करता है।

यह प्रयोग प्रारम्भ करने से पूर्व पहले दस हजार मन्त्र-जप करके इस मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए, सिद्ध करते समय किसी का नाम उच्चारण न करके मात्र 'अमुक' शब्द ही उच्चारित किया जाता है।

२२—मन्त्र द्वारा आकर्षण प्रयोग

सामग्री-हकीक माला, तेल का दीपक।

माला-शंख माला।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन– लाल रंग का आसन।

दिशा—पश्चिम दिशा।

जप संख्या—एक लाख।

अवधि—जो भी सम्भव हो।

मन्त्र– ।। ॐ नमो वीर वैतालाय सहस्रभुजाय हुंकाराय आदि पुरुषाय अमुकं आकर्षण कुरु कुरु स्वाहा ।।

प्रयोग–ऊपर वाले प्रयोग में किसी वस्तु या पदार्थ को सिद्ध करके सामने वाले को खिलाने पर वह वश में होता है, परन्तु इस प्रयोग में किसी वस्तु को खिलाने की जरूरत नहीं होती केवल मन्त्र जप से ही किसी भी व्यक्ति को वश में किया जा सकता है, पहले सवा लाख मन्त्र-जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध होता है।

फिर जब किसी के लिए प्रयोग करना हो तब रात्रि को तेल का दीपक जलाकर उपरोक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करना चाहिए और अमुकं के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम उच्चारण करना चाहिए, जिसे वश में करना हो, यह मन्त्र जप एक लाख करना होता है, एक लाख मन्त्र जप पूरा होते ही वह व्यक्ति वश में हो जाता है और भविष्य में उसे जो भी काम सौंपा जाता है, वह पूरा करता है।

२३—आकर्षण प्रयोग

सामग्री—सफेद कनेर की कलम, पुराना शहद लगभग सौ ग्राम, भोजपत्र मूंगा रत्न।

समय—रात का कोई भी समय।

दिशा—पश्चिम दिशा।

मन्त्र– ।। ॐ नमो वैतालाय आदि पुरुषाय अमुकं आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा ।।

प्रयोग–इस प्रयोग में कोई मन्त्र जप नहीं होता अपितु किसी रविवार की शाम को जब सूर्य अस्त हो रहा हो, तब अपनी सबसे छोटी उंगली का रक्त थोड़ा सा निकाल कर सफेद कनेर की कलम से भोजपत्र पर उपरोक्त मन्त्र में जहां अमुक शब्द आया है, वहां उस व्यक्ति का नाम लिख दें, जिसे वश में करना हो।

फिर उस भोजपत्र को शहद में डाल दे और उसे किसी ऐसे स्थान पर रख दे, जहां उसे कोई व्यक्ति स्पर्श न करे।

२४–दूसरे स्थान पर रहने वाले व्यक्ति को बुलाने का प्रयोग

सामग्री—सफेद वस्त्र, (एक फीट लम्बा एक फीट चौड़ा) कुंकुम, लाल चन्दन गोरोचन, तेल का दीपक तथा सुगन्धित अगरबत्ती।

माला–रुद्राक्ष की माला।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन–लाल रंग का सूती आसन।

दिशा–उत्तर दिशा।

जप संख्या–इक्यावन हजार।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ॥ ॐ अमुक वेग वेग आकर्षय आकर्षय प्रस्थापय प्रस्थापय
आगच्छ आगच्छ मणिभद्र स्वाहा ॥

प्रयोग–सबसे पहले किसी भी रविवार से यह मन्त्र-जप प्रारम्भ होता है, अपने सामने सफेद कपड़ा बिछा देना चाहिए और उस पर कुंकुम, लाल चन्दन तथा गोरोचन बराबर मात्रा में लेकर उसकी स्याही बनाकर कपड़े पर मनुष्य का चित्र बनाना चाहिए, उस चित्र के नीचे उसका नाम लिख देना चाहिए, फिर उसके सामने तेल का दीपक लगाकर मन्त्र-जप प्रारम्भ करना चाहिए।

यह कुल एक लाख मन्त्र-जप किया जाता है, इसमें अमुक के स्थान पर उस का नाम बोलना चाहिए जिसे आप बुलाना चाहते हैं।

मन्त्र-जप पूरा होते-होते वह परदेश में रहने वाला व्यक्ति या दूर स्थान पर

रहने वाला व्यक्ति आकर मन्त्र-जप करने वाले को मिल लेता है अथवा मन्त्र-जप समाप्त होने पर उस दूरस्थ व्यक्ति के हृदय में हलचल प्रारम्भ हो जाती है, और वह जल्दी से जल्दी आकर मिलने के लिए बाध्य हो जाता है।

२५—कामदेव प्रयोग

सामग्री-स्फटिक माला (१०८ मनकों की) घी का दीपक।

माला-स्फटिक माला।

आसन-सफेद रंग का कोई भी आसन।

दिशा-पूर्व दिशा।

जप संख्या-इक्यावन हजार।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ॥ ॐ ऐं त्रिपुर देवी महादेवी मम स्वरूपे आकर्षण देहि देहि मम कार्यं सिद्धि करि करि स्वाहा ॥

प्रयोग-किसी भी रविवार से यह प्रयोग प्रारम्भ होता है, सामने लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर स्फटिक मणिमाला रख देनी चाहिए और उसको कुंकुम आदि से पूजा कर, उस पर पुष्प चढ़ाने चाहिए।

फिर दूसरी स्फटिक माला से उपरोक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे, मन्त्र-जप करते समय लाल वस्त्र पर जो माला पड़ी हुई है, उस पर बराबर दृष्टि रखनी चाहिए, मन्त्र जप पूरा होने पर वह वस्त्र पर रखी हुई माला आकर्षण सिद्ध हो जाती है।

इसके बाद वह माला पहन कर यदि किसी के सामने वह व्यक्ति जाता है तो सामने वाला व्यक्ति उसके वश में हो जाता है, इस बात का ध्यान रखे, जिसे वश में करना हो, उसकी नजर पहनी हुई माला पर एक क्षण के लिए पड़ जाय, ज्यों ही उसकी नजर माला पर पड़ेगी, त्यों ही वह वश में हो जायेगा और उसकी इच्छानुसार कार्य करेगा।

२६–मोहिनी प्रयोग

सामग्री–कांसे की थाली, ग्यारह दीपक, सिंदूर, भोजपत्र, जलपात्र।

माला–मूंगे की माला।

समय–रात्रि का कोई भी समय।

आसन–लाल रंग का कोई भी आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

जप संख्या–ग्यारह हजार।

मन्त्र–ॐ नमो अवम्धनी महाराज तेल का दीपक घी की जोत, फूलों की माला, गले विराजे, आपकी गति कोई न जाने, हाथ पछानू मुख धोऊं, सुमिरूं आपका नाम निरन्तर हमारी लाज रखो मोहिनी दोहिनी सोहिनी तीनों बहिन आव आस मोहूं पास मोहूं सब संसार में तिलक लगाकर निकलूं जो देखे वो बंधे अंजनी के पूत की दुहाई, गुरु गोरख-नाथ की दुहाई, मेरी शक्ति, गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

प्रयोग–रविवार की रात्रि को एक थाली में भोजपत्र बिछा दें और उस पर सिंदूर से उपरोक्त मन्त्र लिख ले, फिर उसके सामने ग्यारह तेल के दीपक लगा दें, और इस मन्त्र को निश्चित संख्या में मन्त्र जाप करे, इस प्रकार नित्य करे, जब ग्यारह हजार मन्त्र-जप पूरा हो जाता है तब यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

इसके बाद वह व्यक्ति जिस किसी को भी देखे तो उसके सामने केवल तीन बार मन्त्र पढ़ कर फूंक मारे तो वह व्यक्ति या स्त्री वश में हो जाती है।

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है और तुरन्त प्रभाव देता है।

२७-वशीकरण प्रयोग

सामग्री-शंख माला ।

समय-भोजन करते समय ।

जप संख्या-इक्कीस बार नित्य ।

अवधि-ग्यारह दिन ।

मन्त्र- ॥ ॐ नमो कट कट विकट विकट घोर घोर घूर्जटाय विकटाय अमुकं ते वश मानाय स्वाहा ॥

प्रयोग-सबसे पहले दस हजार जप करके इस मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए, फिर जिस समय भोजन करने बैठें तब भोजन करते हुए इस मन्त्र का २१ बार उच्चारण करना चाहिए, इसमें अमुकं के स्थान पर उसका नाम उच्चारण करना चाहिए, जिसे वश में करना हो, यह दोनों समय भोजन करते समय नित्य करना चाहिए और केवल ग्यारह दिन ऐसा करने से वह वश में हो जाता है, जिसका नाम उच्चारित किया जाता है, इस प्रयोग में मात्र दो समय ही भोजन करना चाहिए, इसके अलावा किसी भी प्रकार का अन्न या फल खाना वर्जित है ।

२८-चमत्कारिक सम्मोहन प्रयोग

सामग्री-जल पात्र, सियार सिंगी (मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त घृत का दीपक अगरबत्ती, दूध का प्रसाद ।

माला-रुद्राक्ष माला ।

समय-रात्रि का कोई भी समय ।

आसन-लाल रंग का सूती आसन ।

दिशा-उत्तर दिशा ।

जप संख्या-दस हजार ।

अवधि-पांच या ग्यारह दिन ।

मन्त्र– ।। ॐ नमो आदेश गुरु को सिद्ध माता स्तम्भनि
मोहिनी वशी करणी अमुक मोहिनी मम वश्य
करि करि इच्छित कार्य पूर्ति कुरु कुरु स्वाहा ।।

प्रयोग-यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ करना चाहिए, पहले दस हजार मन्त्र जप - करने पर यह सिद्ध हो जाता है, सिद्ध करने के लिए सामने लकड़ी के तख्ते पर सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर किसी कटोरी में सियार सिंगी रख दें और उस पर केसर से तिलक कर दें सामने दीपक लगा दें, व अगरबत्ती जलावे, फिर रुद्राक्ष की माला से मन्त्र जप करे ।

दस हजार मन्त्र जप करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है, तब उस सियार सिंगी को किसी गोपनीय स्थान पर रख दें और जब किसी को अपने वश में करना हो तो सियार सिंगी के पास या ऊपर थोड़ी सी चीनी या दूध का प्रसाद अथवा सुपारी या पान या कोई भी वस्तु रख कर केवल ग्यारह बार यह मन्त्र पढ़ें और अमुक के स्थान पर उसका नाम उल्लेख करे, जिसे वश में करना हो, ग्यारह बार पढ़ कर उस पर जो सामग्री रखी है, वह उसे खिला दें, जिसे वश में करना हो, खाते ही वह प्राणी आपके वश में हो जायेगा, और जीवन भर आपकी इच्छानुसार कार्य करेगा ।

२६–सर्वजन वशीकरण प्रयोग

सामग्री–कांसे का पात्र, सियार सिंगी, दूध का प्रसाद, तेल का दीपक ।

माला–हकीक माला ।

समय–रात्रि का कोई भी समय ।

आसन–लाल रंग का आसन ।

दिशा–पश्चिम दिशा ।

जप संख्या–दस हजार ।

अवधि–नौ या ग्यारह दिन ।

मन्त्र ॥ ॐ नमो आदेश गुरु को राजा प्रजा मोहूं, ब्राह्मण
बणिया मोहूं, आकाश पाताल मोहूं, दस दिशाएं मोहूं,
जो रामचन्द्र परमणिया अमुक को अमुक से मोहे,
गुरु की शक्तिमेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

प्रयोग–रात्रि को सामने लाल वस्त्र बिछाकर उसपर सियार सिंगी रख दें, यह सियार सिंगी मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए, फिर इस पर केसर का तिलक कर दे, और सामने दूध के प्रसाद का भोग लगावे, दीपक और अगर-बत्ती लगाकर उपरोक्त मन्त्र का जप करे, दस हजार मन्त्र जप पूरा होने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकता के समय श्रीराम चन्द्र जी का ध्यान कर चौराहे की धूल चुटकी भर लाकर अपने दाहिने हाथ में रखकर इस मन्त्र का २१ बार उच्चारण करे, उच्चारण करते समय 'अमुक' के स्थान पर उन नामों का उच्चारण करे, जिन्हें परस्पर मोहित या सम्मोहित करना हो।

फिर वह चुटकी भर धूल जिसके सिर पर डाल दी जायेगी वह दूसरे व्यक्ति से सम्मोहित हो जायेगा और जीवन भर उसके कहने के अनुसार कार्य करेगा।

इस मन्त्र में विशेष तथ्य यह है, कि कर्ता स्वयं अलग रह कर दो अन्य व्यक्तियों को सम्मोहित कर सकता है।

३०— त्रैलोक्य वशीकरण प्रयोग

सामग्री–हकीक माला, तेल का दीपक।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन–किसी भी प्रकार का कोई भी आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–एक लाख।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ॥ ॐ नमो भूत भावन भूतनाथ समस्त भुवन साधय हुं फट् ॥

प्रयोग-दीपक लगाकर हकीक माला से एक लाख मन्त्र जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, मन्त्र सिद्ध होने के बाद साधक जिस व्यक्ति की ओर मुँह करके पांच बार मन्त्र पढ़कर फूँक मार दे, तो वह वशीभूत हो जायेगा और उसके इच्छानुसार कार्य करेगा।

३१—तकाजा दूर करने का प्रयोग

सामग्री-तांबे का पात्र, हत्था जोड़ी, (मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त) दूध का बना प्रसाद, तेल का दीपक, लोबान धूप ।

माला-वन माला ।

आसन-सफेद सूती आसन ।

दिशा-पूर्व दिशा ।

जप संख्या-दस हजार ।

समय-दिन या रात्रि का कोई भी समय ।

अवधि-जो भी सम्भव हो ।

मन्त्र- ॥ ॐ नमो भूताय इस्माइल जोगी, कामाक्षा देवी, बीड़ा उठावे मेरा कार्य सिद्ध करे, कोऊ न मांगे धन देवे, मीठा बोले कारज करे
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, दुहाई गुरु गोरख नाथ की ॥

प्रयोग-तांबे के एक पात्र में हत्था जोड़ी रख दे और उस पर कुंकुम या सिंदूर से तिलक करे, सामने भोग लगावे, लोबान का धूप और दीपक लगावे, फिर मन्त्र जप प्रारम्भ करें, यह मन्त्र जप दस हजार का होता है, दस हजार मन्त्र जप करने के बाद हत्था जोड़ी पर जो सिंदूर लगाया हुआ होता है, उसका तिलक करके कर्जा मांगने वाले के सामने जावे तो वह कर्जा नहीं मांगेगा और वह प्रेम से बोलेगा, साथ ही साथ यदि और कर्जा चाहिए तो वह देगा ।

इस मन्त्र में विशेषता यह है कि यदि आपने किसी से कर्जा लिया हो और वह बार-बार तकाजा करके परेशान कर रहा हो, तो यह मन्त्र जप पूरा कर सिंदूर का तिलक लगा कर कर्जे वालों के सामने जावे, तो वे कर्जा नहीं मांगेंगे और भविष्य में यदि आवश्यकता पड़े, तो वे कर्जा देंगे।

इसमें मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पूर्व ही हत्था जोड़ी के नीचे कुछ सिंदूर रख देना चाहिए, जो कि पचास ग्राम तक हो सकता है, यही सिंदूर तिलक करने के काम में आयेगा।

३२—सेवक वशीकरण प्रयोग

सामग्री–हत्था जोड़ी।

माला–हकीक माला।

समय–दिन या रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद सूती आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–तीन हजार।

अवधि–तीन दिन।

मन्त्र– ॥ ॐ नमो ह्रींकारो मम सेवय वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

प्रयोग–यह केवल तीन दिन का प्रयोग है और नित्य एक हजार मन्त्र जप करना होता है, मन्त्र जप से पूर्व हत्था जोड़ी के नीचे कुछ सिंदूर रख दें और जब यह मन्त्र जप पूरा हो जाय, तो वह सिंदूर सेवक के पहनने वाले कपड़े पर थोड़ा सा लगा दे, या उसके सिर पर डाल दे, ऐसा करते ही वह सेवक वश में हो जायेगा और आगे के जीवन में स्वामी के कहने के अनुसार कार्य करता रहेगा।

यह प्रयोग तब किया जाता है, जब कोई नौकर या सेवक विद्रोह कर दे, अथवा कहना नहीं माने या बार-बार नौकरी छोड़ने के लिए कहे, तब यह प्रयोग

सम्पन्न किया जाता है, इससे वह नौकर धागे के जीवन में स्वामी की आज्ञा का पालक बना रहता है।

३३—स्वामी वश प्रयोग

सामग्री—सौ ग्राम सिंदूर, दो मुखी रुद्राक्ष, तेल का दीपक।

माला-मूंगे की माला।

समय—दिन या रात का कोई भी समय।

आसन—लाल रंग का सूती आसन।

दिशा—पश्चिम।

जप संख्या—दस हजार।

अवधि- दस दिन।

मन्त्र- ॥ ॐ कामरु देश कामक्षा देवी तहां बसे इस्माइल जोगी जोगी ने बीड़ा उठाया छाती तीजा बीड़ा अंग लगाया मेरा मालिक पांय परे मेरा कहा माने दुहाई गुरु गोरखनाथ की ॥

प्रयोग—दीपक लगाकर सामने सिंदूर के ऊपर दो मुखी रुद्राक्ष रख दे और मन्त्र जप प्रारम्भ करे, नित्य एक हजार मन्त्र जप करना होता है, जब मन्त्र जप पूरा हो जाता है, तब वह दो मुखी रुद्राक्ष किसी भी समय धीरे से अपने मालिक के अंग को छुआ दे तो वह मालिक वश में हो जाता है और कुछ नहीं कहता, साथ ही साथ उसके वश में होकर जैसा वह कहता है, उसके अनुसार कार्य करने लग जाता है।

३४—व्यापार बाधा दूर करने का प्रयोग

सामग्री—मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त व्यापार सिद्धि, सौ ग्राम सिंदूर, तेल का-दीपक लोबान धूप।

माला- हकीक माला ।

समय-दिन रात का कोई भी समय ।

आसन-सफेद सूती आसन ।

दिशा-पश्चिम दिशा ।

जपसंख्या-दस हजार

अवधि-जो भी सम्भव हो ।

मन्त्र ।। ॐ आकर्षय स्वाहा ।।

प्रयोग-यह प्रयोग किसी भी रविवार को प्रारम्भ किया जा सकता है, सामने सियारसिंगी रख दे और अपने दाहिने हाथ की सबसे छोटी उंगली का रक्त थोड़ा सा निकाल कर उस पर लगा दे, तथा सियार सिंगी के नीचे सौ ग्राम सिंदूर रख दे, उसके बाद हकीक माला से उपरोक्त मन्त्र जप करे ।

मन्त्र जप पूरा होने पर अपनी दुकान या प्रतिष्ठान के सामने इस सियार सिंगी को सिंदूर के साथ गाड़ दे, तो व्यापार में जो भी बाधा पहुंचाने वाले है, या वाणिज्य व्यवसाय में कोई कष्ट दे रहा है, तो वह शान्त हो जाता है और वशीभूत होकर सहायक हो जाता है, जब तक वह सियार सिंगी दुकान के सामने गड़ी रहेगी, तब तक कोई बाधा नहीं आयेगी और न कोई दुकान को हानि पहुंचाने की चेष्टा करेगा ।

३५—स्त्री वशीकरण प्रयोग

सामग्री-कामरूप मणि, कुंकुम, घी का दीपक, अगरबत्ती, जलपात्र, केसर ।

माला-मूंगे की माला ।

समय-दिन रात का कोई भी समय

आसन-सफेद सूती आसन ।

दिशा-उत्तर दिशा ।

जप संख्या-दस हजार।

अवधि-पांच दिन।

मन्त्र ।। ॐ नमो उर्वशी तोहे मन्त्र पढ़ी सुन ऊं, तोही या कलेजा लावे तोही जोवता चाहे जो वश्य न होय तो हनुमन्त की आन अमुक वस्य करे, दौड़ कर हिये लगे। मेरा कहा करे, शब्द साचा पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

प्रयोग-सामने किसी पात्र में कामरूप मणि रख दे, सबसे पहले उसे जल से धो कर, पोंछ कर उस पर कुंकुम या केसर का तिलक करे, सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर फिर मन्त्र जप प्रारम्भ करे, मन्त्र में जो अमुक शब्द आया है, उस जगह उसका नाम उच्चारित करे, जिसे वश में करना हो।

मन्त्र जप पूरा होने पर कामरूप मणि जेब में रख कर उस स्त्री के सामने जावे तो वह निश्चित रूप से वश में होती है, यदि वह दूर रहती हो तो उसके चित्र के साथ कामरूप मणि बांध कर सन्दूक में रख दे, तब भी उसके मन में मिलने की चाह बहुत अधिक बढ़ जायेगी और वह जब तक मिलेगी नहीं तब तक बेचैन रहेगी।

३६— पुरुष वशीकरण प्रयोग

सामग्री-कामरूप मणि, कुंकुम, घी का दीपक, अगरबत्ती, जलपात्र, केसर आदि

माला-मूंगे की माला।

समय-दिन रात का कोई भी समय।

आसन-सफेद सूती आसन।

दिशा-उत्तर दिशा।

जप संख्या-दस हजार।

अवधि-पांच या ग्यारह दिन।

मन्त्र– ।। आकाश की जोगिनी, पाताल का नाग, उड़ जा गुनाव फलाने के लाग सूते न होय न बैठे सुख न होय, फिर फिर देखे मेरा मुख हमको छोड़े दूसरे के पास जाय तो काढ़ि कलेजा नाहरसिंह वीर खाय । फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

प्रयोग–यह प्रयोग किसी पुरुष या प्रेमी को वश में करने के लिए होता है, वह चाहे किसी शहर में हो या कहीं दूर रहता हो, इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर उसके हृदय में बहुत अधिक चाह बढ़ जायेगी और जब तक वह प्रयोग करने वाली के पास नहीं आयेगा तब तक उसे चैन नहीं पड़ेगा ।

सामने कामरूप मणि रख कर पहले जल से धोकर उस पर केसर का तिलक करे और अगरबत्ती व दीपक लगाकर मन्त्र जप प्रारम्भ करे, मन्त्र में जहां 'फलाने' शब्द आया है, उस स्थान पर उसका नाम उच्चारण करे, जिसे वश में करना हो ।

मन्त्र जप पूरा होते-होते वह पुरुष वश में हो जाता है और फिर कभी उसको छोड़ कर अन्य किसी के पास नहीं जाता है ।

३७—पति वशीकरण प्रयोग

सामग्री-सियार सिंगी, लोबान धूप, सौ ग्राम सिंदूर

माला-हकीक माला ।

समय-दिन रात का कोई भी समय ।

आसन-सफेद सूती आसन ।

दिशा-उत्तर दिशा ।

जप संख्या-दस हजार ।

अवधि-पांच दिन ।

मन्त्र ।। ॐ ह्रीं भोगप्रदा भैरवी मातंगी, अमुकं वशमानाय स्वाहा ।।

प्रयोग-यह प्रयोग अपने पति को वश में करने के लिए होता है, यदि पति दुराचारी हो या उसका पर स्त्री गमन हो अथवा दुःख देता हो, तो इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

सामने किसी पात्र में सियार सिंगी रख दें और उसके नीचे सिंदूर बिछा दें, फिर तेल का दीपक लगाकर मन्त्र जप प्रारम्भ करे, मन्त्र में जहां अमुक शब्द आया है, वहां पति के नाम का उच्चारण करे, मन्त्र जप पूरा करने पर सियार सिंगी के नीचे या पास में जो सिंदूर बिछा हुआ होता है, वह उसके कपड़े पर लगा दे, तो ऐसा करते ही पति वश में हो जाता है और भविष्य में बराबर उसका कहना मानता है।

जब तक सियार सिंगी उस स्त्री के पास रहेगी, तब तक वह पति बराबर वश में बना रहेगा।

३८ – सौभाग्य वृद्धि प्रयोग

सामग्री–सौभाग्य यन्त्र, (मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त) कौ प्राम सिंदूर, घी का दीपक, अगरबत्ती।

माला–तुलसी की माला।

समय-दिन रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद सूती आसन।

दिशा–पूर्व दिशा।

जप संख्या–एक लाख।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र– ॥ ॐ ह्रीं महादेवताय महायक्षिण्यै मम
अखण्ड सौभाग्यं देहि देहि नमः ॥

प्रयोग–एक डिब्बी में सौ ग्राम सिंदूर रख कर उस पर सौभाग्य यन्त्र रख दे, वह चांदी से निर्मित तावीज की तरह होता है, और मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होता है, उसपर किसी भी सोमवार से केसर का तिलक कर सामने अगरबत्ती व दीपक लगा कर मन्त्र जप प्रारम्भ करे।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो सिंदूर सहित वह तावीज अपने सन्दूक में रख दे, ऐसा करने पर वह अखण्ड सौभाग्यवती बनी रहती है।

यदि किसी स्त्री का पति बीमार, दुर्बल या कमजोर हो अथवा शत्रुओं से परेशान हो या समस्याओं से घिर गया हो, तो पत्नी को चाहिए कि वह प्रयोग सम्पन्न करे, ऐसा करने से पति के जीवन पर जो संकट आया हुआ होता है, वह दूर हो जाता है, और उसका सौभाग्य अखण्ड रहता है।

वस्तुतः प्रत्येक सौभाग्यवती स्त्री को यह प्रयोग सम्पन्न कर लेना चाहिए।

३६—पुत्र प्राप्ति प्रयोग

सामग्री–मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त पुत्रेष्टि यन्त्र, केसर, जल पात्र, दूध से बनी खीर।

माला–स्फटिक माला।

समय–दिन या रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद सूती आसन।

दिशा–पूर्व दिशा।

जप संख्या–सवा लाख।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र ।। ॐ देवकी सुत गोविन्द, वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्णत्वा महं शरणागते ।।

प्रयोग—सामने किसी पात्र में पुत्रेष्टि यन्त्र रख दे और उसे जल में धोकर पोंछ कर उस पर केसर से तिलक करे, सामने थोड़ी सी दूध की बनी हुई खीर का भोग लगावे, फिर मन्त्र जप प्रारम्भ करे।

प्रति दिन मन्त्र जप पूरा होने पर भोग लगाई गई खीर को पति-पत्नी दोनों थोड़ी - थोड़ी खा लें, इस प्रकार नित्य करें, जब तक मन्त्र जप पूरा नहीं हो जाय, मन्त्र जप पूरा होने के बाद पुत्रेष्टि यन्त्र पत्नी के गले में पहना दें, यह यन्त्र सोने या चांदी अथवा काले धागे में पिरोकर पहना जा सकता है।

इससे शीघ्र पुत्र प्राप्ति होती है और उनकी इच्छापूर्ति होती है।

४०—गर्भ क्षरण रोकने का प्रयोग

सामग्री—मूंगा रत्न, जल पात्र, केसर।

माला – हकीक माला।

समय—दिन या रात का कोई भी समय।

आसन— लाल रंग का सूती आसन।

दिशा—पूर्व दिशा।

जप संख्या—सवा लाख।

अवधि—पांच दिन।

मन्त्र ॥ ॐ नमो आदेश गुरु को जल बांधूं थल बांधूं
डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत पिशाच बांधूं गिरता
गर्भ बांधूं, दोष बांधूं वन्ध्या दोष बांधूं गुरु की
शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥

प्रयोग—सामने किसी पात्र में मूंगा रत्न रख कर उसे जल से धोकर पोंछ कर केसर या कुंकुम से तिलक करें, फिर दीपक अगरबत्ती लगाकर मन्त्र जप

प्रारम्भ करे, जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तो उस मूंगा रत्न को अंगूठी में जड़वा कर स्त्री के दाहिने हाथ की किसी उंगली में पहिना दे, यह अंगूठी सोने की या चांदी की बनाई जा सकती है।

ऐसा करने पर गर्भ क्षरण रुक जायेगा और उसकी भली प्रकार से सन्तान उत्पन्न हो जायेगी।

यह प्रयोग पत्नी को कराना चाहिए, यदि किसी के गर्भपात होता है, या बार-बार गर्भ गिरने से सन्तान नहीं हो रही है, तो इस प्रयोग को करने से गर्भ क्षरण रुक जाता है और उसके सही सलामत सन्तान उत्पन्न हो जाती है।

४१—नजर उतारने का प्रयोग

सामग्री—कार्य सिद्धि माला

समय—दिन रात का कोई भी समय।

आसन—लाल रंग का सूती आसन।

दिशा—पूर्व दिशा।

जप संख्या—दस हजार।

अवधि—पांच दिन।

मन्त्र— ॥ ॐ नमो भगवते पार्श्व नाथाय, पद्मावती सहिताय
सर्व दोष नाशाय सर्व ज्वर नाशाय त्रासय त्रासय
समस्त दोष नाशय ह्रीं नाशय ह्रां नाश नमः ॥

प्रयोग—पहले साधक को कार्य सिद्धि माला से मन्त्र जप करके मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए, यह कार्य सिद्धि माला से दस हजार मन्त्र जप करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र सिद्ध होने पर जब किसी की नजर उतारनी हो तो इस माला को पहिन कर लोहे की कील या चिमटे से सामने वाले व्यक्ति, स्त्री या बालक

(जिसको नजर लगी हो) को बिठा कर इस मन्त्र का सात बार मन ही मन उच्चारण कर फूंक देने से सामने वाले की नजर उतर जाती है।

४२—बाल ज्वर नाशक प्रयोग

सामग्री–शिशु स्वास्थ्य यन्त्र (मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त) घी का दीपक

माला–मूंगे की माला।

समय–दिन या रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–तीन हजार।

अवधि–तीन दिन।

मन्त्र– ॥ ॐ नमो आदेश भगवती भवानी बालकष्ट बाल रोग
बाल पीड़ा दूर कर सर्व विधि सुख दे जो मेरा
आदेश नहीं माने तो राजा राम की दुहाई ॥

प्रयोग–सामने शिशु स्वास्थ्य यन्त्र, जो कि ताबीज की तरह होता है, और मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होता है, उस पर केसर का तिलक कर दीपक लगा कर नित्य एक हजार मन्त्र जप करे, इस प्रकार तीन दिन करने पर वह यन्त्र विशेष प्रभावशाली हो जाता है, इसके बाद वह यन्त्र बीमार बालक के गले में काले धागे में पिरो कर पहनाया जाय तो बालक का बुखार या अन्य किसी भी प्रकार का रोग दूर हो जाता है और वह स्वस्थ हो जाता है।

स्वस्थ हो जाने पर वह यन्त्र किसी दूसरे बालक को पहना कर उसका बुखार तकलीफ आदि दूर की जा सकती है, इस प्रकार वह यन्त्र कई बार प्रयोग में लाया जा सकता है।

यदि इस प्रकार का यन्त्र बालक के गले में पहनाया हुआ रहे, तो उसे

नजर नहीं लगती, बुखार नहीं आता या बालकों से सम्बन्धित कोई रोग नहीं होता, उसके दांत आसानी से निकलते हैं और बालक हमेशा निरोग बना रहता है।

४३—शत्रु बुद्धि स्तम्भन प्रयोग

सामग्री-जल पात्र, छह हकीक पत्थर, तेल का दीपक, लोबान धूप।

माला-शंख माला।
समय-रात्रि का कोई भी समय।

आसन-काले रंग का सूती आसन।

दिशा-दक्षिण दिशा।

जप संख्या-दस हजार।

अवधि-तीन दिन या पांच दिन।

मन्त्र ॥ ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धि स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

प्रयोग-सबसे पहले दस हजार मन्त्र जप करके मंत्र को सिद्ध किया जाता है, इसके बाद जब किसी विशेष शत्रु को स्तम्भित करना हो, तो उन पांच हकीक पत्थरों के आगे एक और हकीक पत्थर रख दें और उस अलग रखे हुए हकीक पत्थर पर शत्रु का नाम लिख दें, यह सिंदूर या कुंकुम से लिखा जा सकता है, फिर इक्कीस बार उपरोक्त मन्त्र पढ़ कर उस अलग रखे हुए हकीक पत्थर पर फूंक मारें तो सम्बन्धित शत्रु की बुद्धि स्तम्भित हो जाती है।

इस प्रकार मन्त्र जप सिद्ध करने हेतु जो पांच हकीक पत्थर होते हैं, वे हमेशा के लिए काम आते हैं, परन्तु जिस हकीक पत्थर पर शत्रु का नाम लिखा जाता है, उस पर २१ बार मन्त्र पढ़ कर वह हकीक पत्थर जमीन में गाड़ दिया जाता है, इस प्रकार कोई और अन्य शत्रु पर प्रयोग करना हो तो इसी प्रकार एक अन्य हकीक पत्थर लेकर प्रयोग किया जाता है, स्तम्भन का तात्पर्य बुद्धि नष्ट कर देना है।

४४–शत्रु मुख स्तम्भन प्रयोग

सामग्री–बगलामुखी देवी का यन्त्र, बगला मुखी देवी का चित्र, जल पात्र, दीपक (शुद्ध घी का) सिंदूर, पीले पुष्प।

माला–हल्दी की माला।

समय–रात्रि का कोई भी समय।

आसन–पीले रंग का कोई भी आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–इक्यावन हजार।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र– ।। ॐ ह्लीं बगलामुखीं सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पद स्तम्भय
जिह्वा कीलय बुद्धि बिनाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा ।।

प्रयोग–इसमें साधक को पीली धोती पहिन कर पीले आसन पर बैठना चाहिए और किसी भी गुरुवार से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है, सर्व प्रथम बगला मुखी यन्त्र व चित्र की सामान्य पूजा कर उस पर पीले पुष्प चढ़ावे, सामने अगरबत्ती व दीपक लगा लें, फिर हल्दी की माला से इक्यावन हजार जप कर उपरोक्त मन्त्र को सिद्ध कर लें।

सिद्ध करने के बाद जब किसी शत्रु पर प्रयोग करना हो तो एक हकीक पत्थर लेकर उस पर शत्रु का नाम लिख ले, तथा उसे बगला मुखी चित्र के सामने रख दे, फिर उपरोक्त मन्त्र का एक हजार बार उच्चारण करे, तो शत्रु का मुख स्तम्भित हो जाता।

मन्त्र जप के बाद वह हकीक पत्थर जमीन में गाड़ देना चाहिए, जब तक वह हकीक पत्थर जमीन में गड़ा रहेगा तब तक शत्रु का मुख स्तम्भित रहेगा।

स्तम्भन का तात्पर्य कुंठित कर देना है, बुद्धि स्तम्भित होने पर उसके

सोचने विचारने की शक्ति समाप्त हो जाती है और मुख स्तम्भन करने पर वह हकलाने लग जाता है और भली प्रकार बोल नहीं पाता।

४५—शत्रु स्तम्भन प्रयोग

सामग्री- जल पात्र, पीले पुष्प, बगलामुखी देवी का यन्त्र-चित्र, घी का दीपक सिंदूर।

माला—हल्दी की माला।

समय—रात का कोई भी समय।

आसन—पील रंग का सूती आसन।

दिशा—दक्षिण दिशा।

जप संख्या—एक लाख।

अवधि—जो भी सम्भव हो

मन्त्र - ।। ॐ ह्लीं बगलामुखीं अमुकं दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय बुद्धि विनाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा ।।

प्रयोग-यह प्रयोग रविवार से प्रारम्भ करना चाहिए, साधक स्वयं पीली धोती पहन कर बैठे फिर गेहूं के आटे की एक मनुष्याकृति बना ले और उस पर शत्रु का नाम सिंदूर से लिख लें, फिर उपरोक्त मन्त्र का जप करे।

सबसे पहले उपरोक्त मन्त्र का एक लाख जाप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है, सिद्ध करने के लिए किसी शत्रु का पुतला बनाने की जरूरत नहीं है, परन्तु मन्त्र सिद्ध होने के बाद मन्त्र में जहां 'अमुकं' शब्द आया है, वहां पर शत्रु का नाम उच्चारित करता हुआ दस हजार मन्त्र जप करते ही शत्रु स्तम्भित हो जाता है, उसकी बुद्धि चतुराई सब कुछ बर्बाद हो जाती है और वह पशु की तरह प्रयोग कर्ता की आज्ञा पालन के लिए तैयार रहता है।

४६—उच्चाटन प्रयोग

सामग्री–जल पात्र, सियार सिंगी, तेल का दीपक।

माला–हल्दी की माला।

समय–रात्रि का कोई भी समय।

आसन–पीले रंग का सूती आसन।

दिशा–दक्षिण दिशा।

जप संख्या–एक लाख।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र ।। ॐ नमो भीमास्याय अमुकं शत्रु उच्चाटन फट् स्वाहा ।।

प्रयोग–उच्चाटन का तात्पर्य अपने शत्रु की बुद्धि इस प्रकार बना देना कि वह अपने नियमित व्यवसाय, कार्य व्यापार और स्थान को छोड़ कर बुद्धि भ्रष्ट होकर इधर-उधर भटकता फिरे और बर्बाद हो जाय।

सबसे पहले उपरोक्त मन्त्र का एक लाख जप करके मन्त्र सिद्ध कर लेना चाहिए, जब किसी शत्रु पर प्रयोग करना हो तब सामने सियार सिंगी रख कर उस पर सिंदूर से शत्रु का नाम लिख ले और उपरोक्त मन्त्र में जहां अमुकं शब्द आया है, वहां शत्रु के नाम का उच्चारण कर मात्र एक हजार बार हल्दी की माला से मन्त्र जप करे, तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है, वह दुखी होकर भटकता फिरता है।

एक हजार आठ बार मन्त्र जप करने के बाद वह सियार सिंगी किसी सुनसान स्थान पर जाकर गाड़ देनी चाहिए, जब तक वह गड़ी रहेगी शत्रु परेशान रहेगा, जब शत्रु का उच्चाटन प्रयोग दूर करना हो तब वह सियार सिंगी पुनः बाहर निकाल दे, तो शत्रु का उच्चाटन समाप्त हो जायेगा।

४७-सौत से पति का उच्चाटन प्रयोग

सामग्री-जल पात्र, सियार सिंगी, दो हकीक पत्थर, तेल का दीपक।

माला-हकीक माला।

समय-दिन या रात का कोई भी समय।

आसन-नीले रंग का सूती आसन।

दिशा-पश्चिम दिशा।

जप संख्या-पांच हजार।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ।। ॐ अंजनी पुत्र पवन सुत हनुमान वीर बैताल
साथ लावे मेरी सौत (अमुक) से पति को छुड़ावे
उच्चाटन करे करावे मुझे वेग पति मिले, मेरा
कारज सिद्ध न करे तो राजा राम की दुहाई ।।

प्रयोग-यह प्रयोग तब किया जाता है, जब पति किसी अन्य स्त्री के जाल में फंस गया हो और पत्नी की तरफ ध्यान नहीं दे रहा हो, तब उस पराई स्त्री के जाल से पति को मुक्त कर अपने प्रति प्रेम बढ़ाने के लिए यह प्रयोग किया जाता है, इस प्रयोग से पति और सौत में परस्पर भयंकर लड़ाई हो जाती है और वे भविष्य में एक दूसरे का मुंह देखना पसन्द नही करते।

सामने सियार सिंगी रख दे और उसके सामने दो हकीक पत्थर रख दे, एक पत्थर पर पति का नाम लिखे और दूसरे पत्थर पर उस स्त्री का नाम लिख दे, फिर उपरोक्त मन्त्र का पांच हजार बार जप करे, जप के बाद जिस हकीक पत्थर पर स्त्री का नाम लिखा है, वह पत्थर सुनसान स्थान पर जमीन में गाड़ दे और जिस पत्थर पर पति का नाम लिखा है, वह पत्थर सियार सिंगी के साथ अपने सन्दूक में रख दे, इस प्रकार करने पर सौत से छुटकारा मिल जाता है, पति का उस स्त्री से भयंकर झगड़ा होता है और भविष्य में उनमें किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नही रहता।

४८-कुलटा स्त्री से पर पुरुष उच्चाटन प्रयोग

सामग्री-जल पात्र, सियार सिंगी, दो हकीक पत्थर, तेल का दीपक।

माला-हकीक माला।

समय-दिन या रात का कोई भी समय।

आसन-नीले रंग का सूती आसन।

दिशा-पश्चिम दिशा।

जप संख्या-पांच हजार।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ॥ ॐ अंजनी पुत्र पवन सुत हनुमान वीर बैताल
साथ लावे मेरी सौत (अमुक) से पति को छुड़ावे
उच्चाटन करे करावे मुझे वेग पति मिले, मेरा
कारज सिद्ध न करे तो राजा राम की दुहाई ॥

प्रयोग-पहले पांच हजार मन्त्र जप करके इस मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए और फिर सियार सिंगी के सामने दो हकीक पत्थर रख दे, एक पर उस स्त्री का नाम लिखे, दूसरे हकीक पत्थर पर नाम न लिखे अपितु यह लिखे कि अमुक स्त्री से जिस पुरुष के भी सम्बन्ध हों, फिर दोनों हकीक पत्थर सियार सिंगी के सामने रख कर हकीक माला से पांच हजार मन्त्र जप करे।

मन्त्र जप पूरा होने पर सियार सिंगी के साथ उस हकीक पत्थर को जिस पर स्त्री का नाम अंकित हो, लाल कपड़े में बांध कर सन्दूक में रख दे और वह दूसरा हकीक पत्थर जमीन में गाड़ दे।

इस प्रकार करने से उस स्त्री के अन्य जितने भी पुरुषों से सम्बन्ध होंगे, वे सम्बन्ध खत्म हो जाएंगे और उनमें परस्पर भयंकर लड़ाई-झगड़ा होगा।

यह प्रयोग पति कर सकता है, या वह प्रेमी कर सकता है, जिसे यह विश्वास हो कि मेरी प्रेमिका के सम्बन्ध अन्य पुरुषों से भी है।

४६—काम उच्चाटन प्रयोग

सामग्री-पांच गोमती चक्र, केसर, जल पात्र।

माला—मूंगे की माला।

समय—दिन या रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद सूती आसन।

दिशा—उत्तर दिशा।

जप संख्या—इक्कीस हजार।

अवधि—पांच दिन।

मन्त्र- ॥ ॐ नमो शिवाय पुष्टाय वरदाय, अनंगाय उच्चाटनाय नमः ॥

प्रयोग-यह प्रयोग उस समय करना चाहिए, जब व्यक्ति की इच्छाएं पूरी हो गयी हो और वह सन्यास ले रहा हो, या अपना जीवन पवित्र ब्रह्मचर्य रूप से बिताना चाहता हो।

यह प्रयोग किसी भी गुरुवार से प्रारम्भ किया जा सकता है, सामने लाल वस्त्र बिछाकर उस पर पांच गोमती चक्र रख दे और केसर से तिलक करे, फिर उपरोक्त मन्त्र का इक्कीस हजार जप करे, जप करते समय तेल का दीपक लगा रहने दे।

जप संख्या पूरी होने पर उन पांचों गोमती चक्रों में से चार गोमती चक्र चारों दिशाओं में फेंक दे और पांचवा गोमती चक्र जमीन में गाड़ दे, तो उसका काम उच्चाटन हो जाता है और फिर उसके मन में किसी प्रकार की काम वासना नहीं रहती और न काम से पीड़ित होता है।

५०—त्रैलोक्य उच्चाटन प्रयोग

सामग्री-एकाक्षी नारियल, जल पात्र, घृत का दीपक।

माला—रुद्राक्ष माला।

समय-दिन रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा-पूर्व दिशा।

जप संख्या—इक्यावन हजार।

मन्त्र— ॥ ॐ ह्रों क्लीं हुं फट् ॥

प्रयोग—यह प्रयोग किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है, सामने सफेद रंग का सूती आसन बिछा दें और उस पर चावलों की ढेरी बनाकर उस पर एकाक्षी नारियल रख दे, एकाक्षी नारियल को सिंदूर में घी मिला कर अच्छी तरह से रंग दे और फिर कुंकुम का तिलक करे, इसके बाद घी का दीपक लगाकर रुद्राक्ष की माला से उपरोक्त मन्त्र का इक्यावन हजार जप करे, तो त्रैलोक्य उच्चाटन प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र जप समाप्त होने पर वह नारियल तालाब, नदी, या कुएं में विसर्जित कर दे।

इस प्रकार प्रयोग करने से उसका पूरा संसार, घर-बार पुत्र, पति, पत्नी बंधु-बांधव सभी से उच्चाटन हो जाता है और वह निर्मल होकर बिना राग द्वेष स्वार्थ, मोह, ममता के साधना या पूजा कर सकता है।

५१-नर-नारी विद्वेषण प्रयोग

सामग्री—जल पात्र, मुट्ठी भर काली मिर्च, हत्था जोड़ी, तेल का दीपक।

माला—हल्दी की माला।

समय-दिन रात का कोई भी समय।

आसन-लाल रंग का सूती आसन।

दिशा-दक्षिण दिशा।

जप संख्या-इक्कीस हजार।

अवधि-पांच दिन।

मन्त्र- ।। ॐ अमुकस्य अमुकेन दुर्भगा विद्वेषणाय फट् ।।

प्रयोग-विद्वेषण का तात्पर्य किन्हीं दो अथवा अधिक व्यक्तियों में परस्पर विरोध या लड़ाई-झगड़ा करा देना है, इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न होने पर वे परस्पर लड़ते रहते हैं और जीवन भर दुःखी रहते हैं।

यह प्रयोग किसी भी पुरुष या स्त्री में विद्वेषण कराने में समर्थ है, चाहे वह शत्रु और उसकी पत्नी हो और चाहे कोई पुरुष या उससे सम्बन्धित स्त्री हो।

पहले इक्कीस हजार मन्त्र जप करके यह मन्त्र सिद्ध कर लेना चाहिए, फिर जब प्रयोग करना हो, तब हत्था जोड़ी पर दोनों के नाम लिखकर उसे काली मिर्च के बीच में रख कर मन्त्र जप आरम्भ कर देना चाहिये, जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तब काली मिर्च सहित उस हत्था जोड़ी को लाल वस्त्र में बांध कर समुद्र, नदी, या कुएं में डाल देना चाहिए, ऐसा करने पर सम्बन्धित नर-नारी में विद्वेषण हो जाता है।

५२-शत्रु विद्वेषण प्रयोग

सामग्री-जल पात्र, सिंदूर, काली मिर्च, हत्था जोड़ी, तेल का दीपक।

माला-हकीक माला।

समय-दिन रात का कोई भी समय।

आसन-लाल रंग का ऊनी आसन।

दिशा— दक्षिण दिशा।

जप संख्या—इक्कीस हजार।

अवधि—पांच दिन।

मन्त्र— ॥ ॐ चाण्डालिनी कामाख्या वासिनी
शत्रु परस्पर विद्वेषणाय फट् ॥

प्रयोग—सामने लाल वस्त्र बिछा कर उस पर काली मिर्च रखकर उसके ऊपर हत्था जोड़ी रख दे, हत्था जोड़ी पर कुंकुम से या सिंदूर से शत्रु का नाम लिख दे और फिर मन्त्र जप प्रारम्भ करे।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब उस लाल कपड़े में काली मिर्च के साथ वह हत्था जोड़ी बांध कर सुनसान स्थान पर जमीन में गाड़ दे तो जितने भी शत्रु होंगे, स्वतः ही दुखी होकर निस्तेज हो जाएंगे।

५३—मारण प्रयोग

सामग्री-जल पात्र, सिंदूर, पांच सियार सिंगी, तेल का दीपक।

माला—मरे हुए सर्प के हड्डियों की माला।

समय—रात का कोई भी समय।

आसन—लाल रंग का ऊनी आसन।

दिशा— दक्षिण दिशा।

जप संख्या—सवा लाख।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ॥ ॐ नमो भगवती आर्द्रपटेश्वरी काली आर्द्र जिह्वे चाण्डालिनी रुद्राणी कपालिनी, ज्वालामुखी सप्त जिह्वे सहस्र नयने एहि

एहि अमुक ते पशुं ददामि अमुकस्य जीवं निकृन्तय एहि जीवितापहारिणी हुं फट् रुधिर द्रव शाखादिनी मम शत्रून् छेदय छेदय शोणित पिब पिब हुं फट् स्वाहा ॥

प्रयोग—यह प्रयोग किसी भी रविवार की रात्रि को प्रारम्भ करे, सामने एक लाल वस्त्र बिछा कर उस पर पांच सियार सिंगी रख दे और सिंदूर से तिलक करे, फिर उपरोक्त मन्त्र का जप करे, इसमें जहां अमुकं या अमुकस्य शब्द आया है, वहां शत्रु का नाम उच्चारण करे, इस प्रकार सवा लाख मन्त्र जप करने पर शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

जब प्राणों पर संकट आ जाय तभी इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

५४— शत्रु मारण प्रयोग

सामग्री—जल पात्र, सिंदूर, पांच हत्था जोड़ी, तेल का दीपक, लोबान धूप।

माला—मरे हुए सर्प की हड्डियों की माला।

समय-रात का कोई भी समय।

आसन-लाल रंग का आसन।

दिशा—दक्षिण दिशा।

जप संख्या—सवा लाख।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ॥ ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरू हुक्म रहै मेरा भेजा कारज करे आन बांधू बान बांधू दसो सुर बांधू नौ द्वारा बहत्तर कोठ। बांधू शूल में भेजूं फूल में जाय कोठे जो पड़े थरथर कांपे हल हल हले मेरा भेजा सवा घड़ी सवा पहर कूं बावला न करे तो माता काली की सैया पर पग धरे, बाचा चूके तो ऊबा सूके, बाच छोड़ कुवाचा करे तो धोबी की नाद चमार के कुण्ड में पड़े,

मेरा भेजा बावला न करो तो महादेव की जटा टूटि भूमि में गिरे माता पार्वती के चीर पे चोट करे, बिना हुकुम नहीं मारना हो,
काली के पुत्र कंकाल भैरू फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

प्रयोग–यह प्रयोग किसी भी रविवार से किया जाता है, सामने लाल वस्त्र बिछा कर उस पर पांच हत्था जोड़ी रख दे और सिंदूर में घी मिला कर उस लेप से पांचों हत्था जोड़ियों को रंग दे, फिर उसके सामने लोबान धूप और तेल का दीपक लगाकर मन्त्र जप करे

मन्त्र जप से पूर्व पांचों हत्था जोड़ियों पर शत्रु का नाम सिंदूर या कुंकुम से लिख लेना चाहिए, किन्तु पांचों पर एक ही शत्रु का नाम लिखा जाना चाहिए।

सवा लाख मन्त्र जप पूरा होने के बाद उस लाल कपड़े में पांचों हत्था जोड़ी बांध कर जमीन में गाड़ देने से शत्रु का मारण हो जाता है।

५५–आधा शीशी दूर करने का प्रयोग

सामग्री–जल पात्र, शूकर दन्त, तेल का दीपक।

माला–मूंगे की माला।

समय–दिन या रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद रंग का सूती आसन।

जप संख्या–ग्यारह हजार।

अवधि–पांच दिन।

मन्त्र– ।। ॐ नमो वन की वानरी, काचा फल खाय आधा तोड़े
आधा फोड़े, आधा धरण गिराय, हुंकारे आधा शीशी
जाय शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

प्रयोग–जिस व्यक्ति को आधा शीशी अर्थात् आधे सिर में बरबार दर्द

रहता हो, तो उसे सामने बिठा कर शूकर दन्त से यह मन्त्र पढ़ता हुआ, पांच सीधी रेखाएं खींचे और पांच आड़ी रेखाएं खींचे और प्रत्येक रेखा खींचते समय उपरोक्त मन्त्र पढ़े तो ऐसा करते ही उसका आधा सीसी का रोग समाप्त हो जाता है और भविष्य में उसे कभी भी आधा सीसी का रोग नहीं होता।

इस प्रयोग को करने से पूर्व सामने सफेद वस्त्र पर शूकर दन्त रख कर तेल का दीपक लगा कर ग्यारह हजार मन्त्र जप करने से वह शूकर दन्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है और फिर उस शूकर दन्त की सहायता से उपरोक्त मन्त्र द्वारा अन्य लोगों के भी आधा सीसी रोग समाप्त कर सकता है।

५६–पीलिया रोग दूर करने का प्रयोग

सामग्री–इक्कीस लघु नारियल, जल पात्र, तेल का दीपक।

माला–मूंगे की माला।

समय–दिन रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद सूती आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–ग्यारह हजार।

अवधि–पांच दिन।

मन्त्र– ॥ ॐ नमो वीर बैताल नारसिंह तुलाल पीलिया काटे
झारे पीलिया न रहे, नेक निशान जो रह जाय तो
महाबली हनुमन्त की आन, शब्द साचा पिण्ड
काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

प्रयोग – सबसे पहले अपने सामने किसी तांबे के पात्र में इक्कीस लघु नारियल लेकर उन्हें जल से धोकर और कुंकुम का तिलक कर तेल का दीपक लगाकर उपरोक्त मन्त्र का जप करे, मन्त्र जप पूरा होने पर उन इक्कीस

लघु नारियलों को किसी बर्तन में रख दे बर्तन में रखने से पूर्व सिंदूर में घी मिला कर इन सभी लघु नारियलों को सिंदूर से पोत दे।

जब प्रयोग करना हो तो एक अलग नारियल ले ले, जो मन्त्र सिद्ध नहीं हो अर्थात सिंदूर पुता हुआ न हो, वह लघु नारियल इन इक्कीस लघु नारियलों के मध्य में रखकर ग्यारह बार उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण कर वह नारियल निकाल दे और तोड़ कर जिसे पीलिया हो, उस पर सात बार फेर कर दक्षिण दिशा की तरफ फेंक दे, तो उसका पीलिया रोग समाप्त हो जाता है।

लघु नारियल छोटे - छोटे नारियल होते है, जो एक इन्च से लम्बे और चौथाई इन्च से चौड़े होते है।

५७–दाढ़ पीड़ा दूर करने का प्रयोग

सामग्री–मूंगा रत्न, जल पात्र, तेल का दीपक।

माला–हकीक माला।

समय–दिन या रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद सूती आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–तीन हजार।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र– ॥ कामरू देश कामाक्षा देवी, शिखर से आई कामधेनु
छत्तीस रोटी टाले दाढ़ पीड़ा दूर करे रक्षा करे
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

प्रयोग–प्रयोग करने से पूर्व सामने मूंगा रत्न रख कर उपरोक्त मन्त्र का तीन हजार मन्त्र जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए, फिर प्रयोग करते समय पानी के गिलास में उस मूंगा रत्न को एक बार घुमा कर सिर्फ एक बार मन्त्र पढ़ कर

वह पानी रोगी को पिला दे, तो दुखती दाढ़ बन्द हो जाती है और आगे के दांतों का दर्द नहीं रहता।

५८–दुखती आंखों का प्रयोग

सामग्री–पंचमुखी रुद्राक्ष, जल पात्र, घी का दीपक।

माला–शंख माला।

समय–दिन रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद सूती आसन।

दिशा–उत्तर दिशा।

जप संख्या–तीन हजार।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र– ॥ ॐ नमो झलमल चादर भरी तलाई वहां बैठा
हनुमान भाई फूटे न दुखे न पीड़ा चले दोनों
आंखें झलमल चमके हनुमन्त दुहाई ॥

प्रयोग–सबसे पहले पांच रुद्राक्ष अपने सामने रख दे और घी का दीपक लगाकर तीन हजार मन्त्र जप कर उन पांचों रुद्राक्षों को सिद्ध कर दे।

जब प्रयोग करना हो, तब एक रुद्राक्ष हाथ में लेकर दुखती आंखों पर फेरता हुआ मन्त्र पढ़े, इस प्रकार पांचों रुद्राक्षों को बारी-बारी से दुखती आंखों पर फेरता जाय और मन्त्र पढ़े, इस प्रकार सिर्फ पांच बार करने से दुखती आंखों का दर्द समाप्त हो जाता है और आंखें स्वस्थ हो जाती हैं।

५९–बवासीर दूर करने का प्रयोग

सामग्री–जल पात्र, तेल का दीपक, लोबान धूप।

माला-शंख माला।

समय-दिन रात का कोई भी समय।

आसन-किसी भी प्रकार का कोई आसन।

दिशा-पश्चिम दिशा।

जप संख्या-नित्य ग्यारह सौ।

अवधि-पांच दिन।

मन्त्र- ।। ॐ ईसा रे ईसा कपूर कांच का, शीशा चोर ले जाय यह अन्छर जासे वही खून बवासीर ले जाय, दुहाई तख्त सुलेमान की ।।

प्रयोग-पहले लोबान धूप और तेल का दीपक लगाकर शुक्रवार की शाम से यह प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, किसी मजार पर जाकर इत्र का फोहा चढ़ाकर वहीं पर बैठकर नित्य ग्यारह सौ मन्त्र जप करना चाहिए, तीन दिन तक इसी प्रकार करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जब कोई बवासीर का मरीज आवे तो गिलास में पानी लेकर यह मन्त्र तीन बार पढ़कर फूंक कर वह पानी पिला दे तो किसी भी प्रकार का बवासीर समाप्त हो जाता है।

६०-सर्प कीलने का प्रयोग

सामग्री-जल पात्र, तेल का दीपक, अगरबत्ती, चांदी का बना हुआ सर्प।

माला-मरे हुए सर्प के हड्डियों की माला।

समय-रात का कोई भी समय।

आसन-नीले रंग का सूनी आसन।

दिशा-पश्चिम दिशा।

जप संख्या-एक लाख।

अवधि-चालीस दिन।

मन्त्र- ।। सर्पा रे सर्पा तू चल चले पर्वत चले देश विदेश में
चले आकाश पाताल में चले तुझे बांधू तेरी दादी
नानी बांधू जिसे तुझे गोद में खिलाया उसे बांधू
जिसे तुझे रतन कटोरा दूध पिलाया, मेरा कीला नहीं
रुके तो भस्म हो जाय, गुरु गोरख नाथ की दुहाई नमो
आदेश गुरु को मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

प्रयोग-किसी भी शनिवार की रात्रि को यह मन्त्र जप प्रारम्भ करना चाहिए और चालीस दिन में एक लाख मन्त्र जप करके इसे सिद्ध कर लेना चाहिए, जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब किसी के घर में यदि सर्प है, तो सात बार मन्त्र पढ़ कर फूंक देने से सर्प बिल में से निकल कर बाहर आ जाता है।

यदि सर्प चल रहा हो तो कोई लोहे की कील हाथ में लेकर उस कील को दीवार में या जमीन में थोड़ी सी गाड़ दे तो सांप कीलित हो जाता है और जहां पर होता है, वहीं पर रुक जाता है।

६१—सांप बिच्छू को झाड़ने का प्रयोग

सामग्री—जल पात्र, तेल का दीपक, अगरबत्ती, चांदी का बना हुआ सर्प।

माला—मरे हुए सर्प की हड्डियों की माला।

समय—रात का कोई भी समय।

आसन—नीले रंग सूती आसन।

दिशा—पश्चिम दिशा।

जप संख्या—एक लाख।

अवधि—चालीस दिन।

मन्त्र- ।। उत्तर दिशा आई कालो टादली वहीं मध्य काल
पुरुष बैठा चक्र और गदा विराजे पाताल लोक का
वासी सात खण्ड जाकर गदा मारे। पाताल आय
जहर उतारे शिव आज्ञा में कार्य सुधारे जहर उतारे ।।

प्रयोग-यदि किसी को यह मन्त्र प्रयोग सिद्ध करना हो तो सबसे पहले चांदी के बने हुए सर्प को सामने रख कर उस पर सिंदूर का तिलक कर सामने दीपक लगा कर मन्त्र जप करे, जब एक लाख मन्त्र जप पूरा हो जाता है, तो यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

सिद्ध होने के बाद यदि किसी को सांप या बिच्छू काट ले तो उसे सामने बिठा कर उसी चांदी के सर्प से सात बार यह मन्त्र पढ़ कर झाड़ दे तो सांप और बिच्छू का जहर तुरन्त समाप्त हो जाता है।

६२-मिरगी को दूर करने का प्रयोग

सामग्री-जल पात्र, पंचमुखी रुद्राक्ष के पांच दाने सिंदूर।

माला-मूंगे की माला।

समय-दिन या रात का कोई भी समय।

आसन-सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा-उत्तर दिशा।

जप संख्या-इक्यावन हजार।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ।। ॐ नमो चण्डिका अग्नि बांध अग्निश्वर बांधो मिरगी रोग
आल में बांधो, वायु सूखे मिरगी हटे गोरख नाथ की दुहाई
शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

प्रयोग-सबसे पहले सामने सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर पांच दाने पंचमुखी रुद्राक्ष के रख दे और घी का दीपक लगाकर उपरोक्त मन्त्र का इक्यावन हजार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब वे पांच रुद्राक्ष के दाने डिब्बी में रख देने चाहिए, जब कोई मिरगी का रोगी आवे तो एक नया दाना पचमुखी रुद्राक्ष का लेकर उन पांच दानों के साथ रखकर उपरोक्त मन्त्र का १०१ बार उच्चारण कर वह नया दाना उस रोगी को गले में काले धागे से पिरोकर पहना दे तो उसे मिरगी का रोग नहीं होता, यदि मिरगी आती हो तो समाप्त हो जाती है और भविष्य में कभी मिरग का रोग नहीं होता।

६३–बुखार उतारने का प्रयोग

सामग्री–जल पात्र, घी का दीपक, गोमती चक्र।

माला–वैजयन्ती माला।

समय–दिन रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–इक्कीस हजार।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र– ॥ ॐ क्लीं ठ ठं ज्वर हन हन गर्ज गर्ज भ्रट भ्रट अमुकस्य
ज्वर हन हन मुंच मुंच गच्छ गच्छ स्वाहा ॥

प्रयोग–सबसे पहले प्रयोग कर्त्ता को चाहिए, कि किसी रविवार से यह प्रयोग प्रारम्भ करे, सामने लाल वस्त्र बिछा कर उस पर गोमती चक्र रख दे, केसर का तिलक करे और इक्कीस हजार मन्त्र जप करे, ऐसा करने पर वह गोमती चक्र सिद्ध हो जाता है; तब उसे रविवार के दिन चांदी की अंगूठी में जड़वा कर धारण कर ले।

जब प्रयोग करना हो तो लोहे की कील हाथ में लेकर वह गोमती चक्र-युक्त मुद्रिका उंगली में पहिन कर सात बार मन्त्र पढ़े तो किसी भी प्रकार का बुखार दूर हो जाता है और वह रोगी पूरी तरह से स्वस्थ हो जाता है।

प्रयोग करते समय 'अमुकस्य' के स्थान पर रोगी का नाम उच्चारण करना

चाहिए, प्रयोग करने के बाद चाहें तो गोमती चक्र युक्त अंगूठी उतार कर सुरक्षित स्थान पर रख दें।

६४-सुख प्रसव पीड़ा

सामग्री-जल पात्र, बिल्ली की नाल, सिंदूर।

माला-मूंगे की माला।

समय-दिन रात का कोई भी समय।

आसन-काले रंग का सूती आसन।

दिशा-उत्तर दिशा।

जप संख्या- ग्यारह हजार।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ।। ॐ मुक्ता पासा पिपासा मुक्ता सूर्य रश्मिय:
मुक्ति सर्व भय गर्भ मुक्त दोषे विचिन्तयेत् ।।

प्रयोग-सबसे पहले साधक को चाहिए कि बिल्ली की नाल पर सिंदूर लगा कर किसी भी रविवार से यह प्रयोग प्रारम्भ करे और ग्यारह हजार मन्त्र जप करके मन्त्र को सिद्ध कर ले।

इसके बाद यदि किसी स्त्री का प्रसव नहीं हो रहा हो या विशेष तकलीफ हो रही हो तब उस बिल्ली की नाल को हाथ में लेकर एक बार मन्त्र पढ़ कर उसके शरीर से छुआ दे तो बिना किसी कष्ट के प्रसव हो जाता है और कोई तकलीफ नहीं रहती।

६५-ग्रह दोष निवारण प्रयोग

सामग्री—जल पात्र, घी का दीपक, नवग्रह यन्त्र, अगरबत्ती।

माला-स्फटिक माला।

समय-दिन रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद सूती आसन।

दिशा - पूर्व दिशा।

जप संख्या—इक्यावन हजार

अवधि—जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ।। ब्रह्मा मुरारी स्त्रीपुरान्तकारी भानु शशि भूमि-सुतो बुधश्च
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहा शान्ति करा भवन्तु ।।

प्रयोग—किसी भी रविवार से यह प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, सामने सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर नव ग्रह यन्त्र स्थापित कर लेना चाहिए, उस पर केसर का तिलक कर घी का दीपक लगा कर मन्त्र जप पूरा होने पर उस यन्त्र को अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर देने से सभी प्रकार के ग्रह दोष समाप्त हो जाता है।

६६—जादू उतारने का प्रयोग

सामग्री—बिल्ली की नाल, सूकर दन्त, तेल का दीपक, लोबान धूप।

माला—वैजयन्ती माला।

समय-रात्रि का कोई भी समय।

आसन-लाल रंग का सूती आसन।

दिशा-पूर्व दिशा।

जप संख्या-एक लाख।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ।। ॐ नमो गुरु का आदेश विकट वेश लम्बे केश
प्रहलाद राखे पाताल राखे जो कोई किये करावे
चिन्ते चिन्तावे तो इसको छोड़कर अवर को
ध्यावे मेरा कहना नहीं माने तो नरसिंह वीर खावे ।।

प्रयोग—यदि किसी व्यक्ति बालक या स्त्री पर किसी ने जादू टोना कर दिया हो या तान्त्रिक प्रयोग कर दिया हो तो यह प्रयोग सिद्ध करते समय अपना ध्यान बिल्ली की नाल और शूकर दन्त पर रहना चाहिए।

जब किसी पर प्रयोग करना हो तो भोज पत्र लेकर उस पर ऊपर लिखा मन्त्र किसी भी स्याही से लिख दे, मन्त्र में जहां 'इसको, शब्द है, वहां पर उस व्यक्ति या स्त्री का नाम लिखे जिस पर प्रयोग किया हुआ है, फिर उस भोज पत्र में वह बिल्ली की नाल बांध कर चांदी के ताबीज में डालकर उसे पहना दे, तो कितना ही कठिन भीषण तन्त्र प्रयोग किया हुआ हो, तो भी दूर हो जाता है और फिर वह शूकर दन्त जमीन में गाड़ देना चाहिए।

६७—बाल रक्षा प्रयोग

सामग्री—शूकर दन्त।

माला—दिव्य माला।

समय—दिन रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद सूती आसन।

दिशा—पश्चिम दिशा।

जप संख्या—एक सौ एक।

अवधि—जो भी सम्भव हो

मन्त्र - ।। ॐ नरसिंहाय बाल दोष निवारय फट् स्वाहा ।।

प्रयोग-यह प्रयोग किसी भी सोमवार को करना चाहिए, हाथ में शूकर दन्त लेकर एक सौ एक बार उपरोक्त मन्त्र पढ़ कर वह शूकर दन्त काले धागे में पिरो कर बालक के गले में पहना दिया जाय, तो उस पर किसी प्रकार का जादू टोना, नजर आदि का प्रभाव नहीं होता और उसकी सभी प्रकार से रक्षा होती है।

६८–जुए में जीतने का प्रयोग

सामग्री—स्वर्णाकर्षण गुटिका, तेल का दीपक।

माला—विद्युत माला।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा—उत्तर दिशा।

जप संख्या—इक्कीस हजार।

अवधि—जो भी सम्भव हो।

मन्त्र—॥ ॐ नमो वीर वैताल आकस्मिक धन देहि देहि नमः॥

प्रयोग—किसी भी शुक्रवार की रात्रि को यह प्रयोग करे, दाहिने हाथ में स्वर्णाकर्षण गुटिका लेकर उसे पहले भली प्रकार से देखे, फिर सामने रखकर तेल का दीपक लगाकर उपरोक्त मन्त्र का इक्कीस हजार जप करे, जप के बाद वह स्वर्णाकर्षण गुटिका सिद्ध हो जाती है, फिर जब भी जुए में जाना हो तो यह गुटिका अपनी जेब में डाल कर जुआ खेले तो बराबर जीतता रहेगा।

६९–अटूट भण्डार का प्रयोग

सामग्री—श्री यन्त्र, कनकधारा यन्त्र, कुबेर यन्त्र, केसर, शुद्ध घृत का दीपक अगरबत्ती आदि।

माला—वैजयन्ती माला।

समय–दिन रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा—पूर्व दिशा ।

जप संख्या—इक्कीस हजार ।

अवधि—जो भी सम्भव हो ।

मन्त्र— ॥ ॐ नमो कुबेराय वैश्रवणाय अक्षय
समृद्धि देहि देहि कनकधारायै नमः ॥

प्रयोग—यह श्रेष्ठ और अनुभूत प्रयोग है, साधक को चाहिए कि वह किसी भी रविवार से यह प्रयोग प्रारम्भ करे, सामने सफेद वस्त्र बिछा कर बीच में कुबेर यन्त्र, बांई तरफ श्री यन्त्र तथा दाहिनी तरफ 'कनकधारा यन्त्र' रख दे और उस पर केसर आदि से तिलक कर पुष्प चढ़ावे, सामने अगरबत्ती, दीपक लगावे, फिर जप प्रारम्भ करे ।

मन्त्र जप पूरा हो जाय, तो तीनों यन्त्रों को इसी क्रम से पूजा स्थान में रख दे, तो उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती और सभी दृष्टियों से सुख, समृद्धि का अटूट भण्डार बना रहता है ।

७०—पृथ्वी से गड़ा धन निकालने का प्रयोग

सामग्री—कुबेर पात्र, स्वर्णाकर्षण गुटिका, जल पात्र, शुद्ध घृत का दीपक अगरबत्ती आदि ।

माला—कमल गट्टे की माला ।

समय - दिन या रात का कोई भी समय ।

आसन—सफेद रंग का ऊनी आसन ।

दिशा—उत्तर दिशा ।

जप संख्या—सवा लाख ।

अवधि—जो भी सम्भव हो ।

मन्त्र- ।। ॐ नमो भगवती सुमेरू रूप धारायै महाकान्तायै
कालरूपायै सर्व प्रेत, पिशाच बाधा निवृत्तये
भूगर्भ द्रव्य परि लक्षायै फट् स्वाहा ।।

प्रयोग-सबसे पहले अपने सामने कुबेर पात्र में स्वर्णाकर्षण गुटिका रख कर जल से स्नान करावे, फिर पोंछ कर केसर का तिलक करे, पुष्प चढ़ावे, सामने अगरबत्ती दीपक लगावे, इसके बाद मन्त्र जप प्रारम्भ करे।

मन्त्र जप पूरा होने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है और जिस स्थान पर जमीन में गड़ा हुआ धन होने की सम्भावना होती है, उस स्थान पर शनिवार की रात्रि को कुबेर पात्र गाड़ दे और रात्रि को वहीं सोवे सोते समय सिरहाने स्वर्णाकर्षण गुटिका रख दे तो रात्रि को स्वप्न में स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाता है, कि वह द्रव्य कहां गड़ा हुआ है ? कितना गहरा है ? और कितने परिमाण में वह द्रव्य है ?

इसके बाद अच्छा मुहूर्त देखकर जमीन में गड़े हुए द्रव्य को निकाल लेना चाहिए।

७१-व्यापार वर्धक प्रयोग

सामग्री-बिल्ली की नाल, सिंदूर, शुद्ध घृत का दीपक, अगरबत्ती।

माला-दिव्य माला।

समय-दिन या रात का कोई भी समय।

आसन-सफेद रंग का ऊनी आसन।

दिशा-पूर्व दिशा।

जप संख्या-इक्कीस हजार।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ।। ॐ क्लीं श्रीं श्री परमा सिद्धि व्यापार वृद्धिं नमः ।।

प्रयोग–यह प्रयोग शुक्रवार से प्रारम्भ करना चाहिए, सामने किसी पात्र में बिल्ली की नाल रख कर उसे सिंदूर से पोतना चाहिए, फिर उस पर केसर का तिलक कर सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर मन्त्र जप प्रारम्भ करे।

मन्त्र जप पूरा होने पर सिद्ध बिल्ली की नाल को लाल वस्त्र में लपेट कर दुकान में रख दे तो आश्चर्यजनक रूप से व्यापार में वृद्धि होती है।

७२–सर्व दुख नाशक प्रयोग

सामग्री–काम रूप मणि, भोज पत्र।

माला–विद्युत माला।

समय–दिन रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद सूती आसन।

दिशा–पूर्व दिशा।

जप संख्या–सवा लाख।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ॥ ॐ ह्रीं ह्रं सः नमः ॥

प्रयोग–सबसे पहले केसर से निम्नलिखित यन्त्र को भोज पत्र पर बना ले और फिर उस भोज पत्र को किसी पात्र में रखकर उस पर काम रूप मणि रख दे और किसी भी रविवार से मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे।

यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	१०
१४	९	४	१६
१	५	२१	८

मन्त्र जप पूरा होने पर उस भोज पत्र काम रूप मणि को लपेट कर चांदी के ताबीज में बन्द कर धारण कर ले या सन्दूक में रख दे, तो उसके जीवन के सभी दुख नाश हो जाते हैं।

७३—सद्गुरु दर्शन प्रयोग

सामग्री—सद्गुरु की मूर्ति या चित्र, शुद्ध घृत का दीपक।

माला—स्फटिक माला।

समय—दिन या रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद सूती आसन।

दिशा—उत्तर दिशा।

जप संख्या—एक लाख।

अवधि—जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ॥ ॐ ह्रीं गुरो प्रसीद ह्रीं ॐ ॥

प्रयोग—किसी भी गुरुवार को यह प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, प्रातःकाल स्नान कर स्वच्छ धोती पहन कर सामने गुरुदेव का चित्र रख और विधि-विधान से पूजा कर मन्त्र जप करे, तो मन्त्र जप पूरा होने पर गुरु प्रसन्न होते हैं और वह जिस प्रकार से चाहता है उस प्रकार से उसकी इच्छा पूरी हो जाती है।

यदि किसी को अपना गुरु नहीं मिला हो, तो इस प्रयोग से गुरु मिल जाते हैं, यदि गुरु अप्रसन्न हों तो प्रसन्न हो जाते हैं और शिष्य अपने गुरु से जो विद्या सीखना चाहता है, वह विद्या गुरु स्वतः ही देने को तैयार हो जाते हैं।

७४—खेती फलने फूलने का प्रयोग

सामग्री—भोज पत्र, मोती शंख, जल पात्र।

माला—कार्य सिद्धि माला।

समय–दिन रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा–उत्तर दिशा।

जप संख्या–इक्कीस हजार।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र– ।। ॐ नमो अंजना देवी हर हर शिली
सर्वं शाम तुण्ड बंध फट् स्वाहा ।।

यन्त्र

=	=	=
=	=	=
=	=	=

प्रयोग–जिस खेत में खेती विशेष रूप से तैयार करनी हो, उस खेत की मिट्टी किसी पात्र में रखकर उस पर छोटा मोती-शंख रख दे और फिर सिंदूर से भोजपत्र पर उपरोक्त यन्त्र अंकित करे, उसके बाद वह भोज पत्र शंख में डाल दे और मन्त्र जप प्रारम्भ करे।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तब भोज पत्र सहित उस शंख को खेत की मिट्टी के साथ किसी सफेद वस्त्र में बांध कर सोमवार के दिन खेत के मध्य में गाड़ दे, तो उस वर्ष खेती में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि होगी और अतुलनीय फसल होगी।

७५–स्वप्न में देवता से बात करने का प्रयोग

सामग्री–स्वप्नेश्वरी देवी का चित्र, जल पात्र, केसर, अक्षत, अगरबत्ती दीपक आदि।

माला-कार्य सिद्धि माला।

समय–दिन रात्रि का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन

अवधि–जो भी सम्भव हो।

दिशा–पूर्व दिशा।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

जप संख्या–इक्यावन हजार।

मन्त्र– ।। ॐ ह्रीं विचित्र वीर्य स्वप्ने इष्ट दर्शय नमः ।।

प्रयोग-सामने स्वप्नेश्वरी देवी का चित्र कांच के फ्रेम में मढ़वा कर उसकी सामान्य पूजा करें और अगरबत्ती व दीपक लगाकर किसी भी रविवार को मन्त्र प्रयोग प्रारम्भ करे, जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तो जिस रात्रि को अपने इष्ट या देवता से बात करनी हो, उस रात्रि को एक बार उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण कर सो जाय तो रात्रि में अपने इष्ट या देवता से बात चीत हो जाती है।

७६–दिखाई न पड़ने का प्रयोग

सामग्री–नवरत्न की सामान्य अंगूठी, स्फटिक माला, तेल का दीपक।

माला–विद्युत माला।

समय–रात्रि का कोई भी समय।

आसन–लाल रंग का सूती आसन।

दिशा-पश्चिम दिशा।

जप संख्या—एक लाख।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ॥ ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रू फट् चक्रे सुरे अदृश्य देवी शोणित
भोज पदो मम: इच्छानुसार स्वयं कुरू कुरू स्वाहा ॥

प्रयोग-इसमें पूरे कमरे को लाल रंग से रंगवा ले, फर्श और छत भी लाल रंग की हो, फिर लाल रंग का आसन बिछाकर बैठ जाय और सामने नवरत्न की अंगूठी व स्फटिक माला रख दे, सबसे पहले सामान्य विधि से इसकी पूजा करे, और इसके बाद मन्त्र जप प्रारम्भ करे।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो सवा मन उड़द उबाल कर दक्षिण दिशा की तरफ फेंक दे, और घर आ जाय, इसके बाद जब भी उस मुद्रिका को धारण करेगा, तो वह अदृश्य हो जायेगा. वह सभी को देख सकेगा, पर उसे कोई भी नहीं देख सकेगा।

अंगूठी उतारने के बाद वह पुन: सामान्य हो जायेगा।

७७-भूख प्यास न लगने का प्रयोग

सामग्री—रजत पारद की पांच गोलियां, शहद, अदरक के टुकड़े, तेल का दीपक।

माला-स्फटिक माला।

समय—रात का कोई भी समय।

आसन-सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा-पश्चिम दिशा।

जप संख्या-सवा लाख।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ।। ॐ पर ब्रह्म परमात्मने मम कार्य सिद्ध्यर्थं
क्षुधा तृषां निवारणार्थ ह्रीं फट् स्वाहा ।।

प्रयोग-इसमें स्फटिक माला से मन्त्र जप करना है, अपने सामने अदरक के छोटे-छोटे टुकड़े रख दे, सबसे पहले पांच रजत पारद की गोलियों की पूजा करे और उसके सामने शहद से भरा कटोरा और अदरक के छोटे-छोटे टुकड़ों का भोग लगावे, फिर प्रत्येक माला पूरी होने पर एक अदरक का टुकड़ा शहद में भिगो कर चबा ले और फिर पुनः मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे, इसमें बार-बार मुंह धोने या कुल्ला करने की जरूरत नहीं है, इस प्रकार नित्य तब तक करता रहे, जब तक कि मन्त्र जप पूरा न हो जाय।

इस बात का ध्यान रखे कि अदरक गर्म होती है, अतः अदरक के छोटे-छोटे टुकड़े करके ले अन्यथा शरीर में गर्मी की मात्रा बढ़ जाने का सन्देह रहता है।

जब प्रयोग पूरा हो जाय तो पारद की पांच गोलियां अलग डिब्बी में बन्द करके रख दे, जब ऐसा प्रयोग करना हो तो गर्म दूध में एक मिनट के लिए रजत पारद, जो ठोस मन्त्र सिद्ध हो, डाल दे और वह दूध पी जाय, इसके बाद उसे तब तक भूख नहीं लगेगी, जब तक कि पुनः शहद और अदरक का सेवन नहीं करेगा।

इस बात का ध्यान रखे कि कच्चा पारा शरीर के लिए जहर के समान होता है, अतः मन्त्रों से ठोस किया हुआ पारा ही प्रयोग में लेना चाहिए।

७८—पक्षी शब्द ज्ञान प्रयोग

सामग्री—पांच विभिन्न पक्षियों के पंख, सिंदूर, जल पात्र।

माला-वैजयन्ती माला।

समय-दिन या रात्रि का कोई भी समय।

आसन-व्याघ्र चर्म।

दिशा–दक्षिण दिशा ।

जप संख्या–सवा लाख ।

अवधि—जो भी सम्भव हो ।

मन्त्र - ।। ॐ क्रों हुं हुं सहः ।।

प्रयोग–किसी भी अमावस्या से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाना चाहिए, साधक को चाहिए कि वह रात्रि के बारह बजे के आस पास श्मशान में जाकर दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके बैठ जाय और सामने पांच विभिन्न पक्षियों के पंख रख कर सिंदूर से उन पर तिलक करे और बिना किसी घबराहट या डर के मन्त्र जप प्रारम्भ करे ।

इस प्रकार नित्य प्रयोग करे, जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो उन पांचों पंखों को जलाकर उसकी भस्म किसी डिबिया में रख दे और नित्य ललाट पर तिलक करे, इस प्रकार ग्यारह दिन तक तिलक करे, ऐसा करने से वह पक्षियों की भाषा समझने में समर्थ हो जाता है, और जब कोई भी पक्षी बोलता है, तो उसकी भाषा का अर्थ वह समझ जाता है ।

७६–पाप नाशक प्रयोग

सामग्री—रुद्राक्ष माला, पारद शिवलिंग, घृत का दीपक, बिल्व पत्र आदि ।

माला—वैजयन्ती माला ।

आसन – मृग चर्म आसन ।

दिशा—पूर्व दिशा ।

अवधि—ग्यारह दिन ।

मन्त्र- ।। ॐ ह्रीं ॐ हुं सर्व पापशमने सर्व दोष निवृत्तये हुं हुं हुं ॐ फट् ।।

प्रयोग–यह प्रयोग किसी भी सोमवार को प्रारम्भ किया जाता है, सामने

पारद शिवलिंग स्थापित कर दे और उसकी भली प्रकार से पूजा कर यदि संभव हो तो बिल्व पत्र चढ़ावे और शिवलिंग पर रुद्राक्ष माला पहनावे, फिर सामने घी का दीपक लगाकर वैजयन्ती माला से मन्त्र जप प्रारम्भ करे ।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो उस शिवलिंग को अपने पूजा स्थान में रख दे और उस पर वह रुद्राक्ष माला पहिने रहने दे ।

जिस माला (वैजन्ती माला) से मन्त्र जप प्रारम्भ किया था, उस माला को नित्य साधक अपने गले में पहिने रहे, मन्त्र जप समाप्त होते ही उसके पूर्व संचित सभी पाप समाप्त हो जाते हैं ।

कई बार साधकों को साधना में सफलता नहीं मिलती बार-बार बाधाएं और अड़चनें आती हैं, या उसके जीवन में अनुकूलता प्राप्त नहीं होती तो इसका कारण पूर्व जन्म-कृत दोष या पाप ही होते है, जिसकी वजह से ये अड़चनें आती हैं ।

ऐसा करने पर पूर्व-जन्म-कृत पाप समाप्त हो जाते हैं और आगे के जीवन में उसे प्रत्येक प्रकार की साधना में सफलता प्राप्त हो जाती है ।

८०–कुमारियों को श्रेष्ठ पति प्राप्त करने का प्रयोग

सामग्री—स्फटिक शिवलिंग, लघु नारियल, मौली (कलावा) जल पात्र, घी का दीपक ।

माला—रुद्राक्ष माला ।

समय—दिन या रात का कोई भी समय ।

दिशा—पूर्व दिशा ।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन ।

जप संख्या—सवा लाख ।

अवधि—जो भी सम्भव हो ।

मन्त्र— ।। ॐ गौरी पति महादेवाय मम इच्छित
वर शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त्यर्थं गौर्यै नमः ।।

प्रयोग-किसी पात्र में स्फटिक शिवलिंग स्थापित कर सोमवार से पूजा प्रारम्भ करे और पात्र में ही लघु नारियल पर कलावा चढ़ाकर उसे गौरी मान कर स्फटिक शिवलिंग के बाईं तरफ स्थापित कर दे और फिर उनकी विधि-विधान के साथ पूजा करे, सामने शुद्ध घृत का दीपक लगा ले और फिर मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे।

इस प्रकार नित्य मन्त्र जप करें और जब मन्त्र जप पूरा हो जाए, तो ग्यारह कन्याओं को भोजन करा दे, तथा उस शिवलिंग तथा गौरी को पूजा स्थान में स्थापित कर दे, तो शीघ्र ही उसे वर प्राप्ति हो जाती है और भविष्य में भी वह अखण्ड सौभाग्यवती बनी रहती है।

८१-दरिद्रता निवारण प्रयोग

सामग्री-नर्मदेश्वर शिवलिंग, बिल्व पत्र, शुद्ध घी का दीपक।

माला-रुद्राक्ष माला।

समय-दिन या रात का कोई भी समय।

आसन-सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा—उत्तर दिशा।

जप संख्या-सवा लाख।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ।। ॐ ह्रीं दारिद्र्यदहन महादेवाय नमः ।।

प्रयोग-यह प्रयोग किसी भी सोमवार को प्रारम्भ किया जाता है, सामने किसी पात्र में नर्मदेश्वर शिवलिंग को स्थापित कर दे और उनकी पूजा कर बिल्व पत्र चढ़ा दे, तथा उपरोक्त मन्त्र का जप करे।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तो वह रुद्राक्ष माला अपने गले में धारण कर ले। और नर्मदेश्वर शिवलिंग को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दे, ऐसा करने से पुत्रों से संचित दरिद्रता समाप्त हो जाती है और जीवन में सभी दृष्टियों से आर्थिक, भौतिक उन्नति होने लग जाती है।

८२–सर्व सिद्धि दायक प्रयोग

सामग्री–मोती शंख, भोज पत्र, कुंकुम जल पात्र, घृत का दीपक।

माला–रुद्राक्ष रत्नाकर माला

समय–दिन रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद सूती आसन।

दिशा–उत्तर दिशा।

जप संख्या–सवा लाख।

अवधि–ग्यारह दिन।

मन्त्र– ।। ॐ श्रीं ह्रीं सर्व सिद्धि देहि देहि ह्रीं श्रीं नमः ।।

यन्त्र

२	७	६
९	५	१
४	३	८

प्रयोग–यह प्रयोग किसी भी सोमवार को प्रारम्भ किया जाता है, सामने भोजपत्र, बिछाकर उस पर कुंकुम से सम्बन्धित सिद्धिदायक यन्त्र अंकित करें, और उस पर मोतीशंख स्थापित कर दे, इसके बाद पूजन करे, पुष्प चढ़ावे और

सामने अगरबत्ती व दीपक लगावे, इसके बाद उपरोक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो उस मोती शंख को कार्यालय में दुकान में या घर की तिजोरी में रख दे तथा उस भोज पत्र को चांदी के ताबीज में पिरोकर अपने गले में धारण कर ले या बांह पर बांध ले, ऐसा करने से सर्व सिद्धिदायक प्रयोग सम्पन्न होता है और भविष्य में उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है और प्रत्येक साधक को यह प्रयोग सम्पन्न कर लेना चाहिए।

८३–प्रबल वशीकरण प्रयोग

सामग्री–कामदेव हेत्वा, पुष्प, भोजपत्र, कुंकुम, केसर, जलपात्र, घी का दीपक अगरबत्ती आदि।

माला–विद्युत माला।

समय–दिन रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा–पूर्व दिशा।

जप संख्या–सवा लाख।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र– ॥ ॐ अमुकं वेगेन आकर्षय मणिभद्र स्वाहा ॥

ॐ अमुक वेगेन आकर्षय
मणिभद्र स्वाहा

यन्त्र

प्रयोग–सबसे पहले किसी पात्र में मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कामदेव-हेत्वा स्थापित कर दे और उसके सामने भोज पत्र बिछाकर उस पर केसर तथा

कुंकुम मिलाकर उसकी स्याही से प्रबल वशीकरण यन्त्र अंकित करे और उसके बाद कामदेवहेत्वा तथा इस वशीकरण यन्त्र की पूजा करने के बाद मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे मन्त्र में जहां अमुक शब्द आया है, वहां पर उसका नाम उच्चारित करे जिसे प्रबल रूप से वश में करना हो।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब उस भोज पत्र को चांदी के ताबीज में बन्द कर गले में धारण कर ले, या बांह पर बांध ले, तथा कामदेव हेत्वा को अपने घर के संदूक में रख दे।

ऐसा करने पर जिसके नाम से मन्त्र जप होगा वह प्रबल रूप से वश में हो जायेगा, यह प्रयोग पुरुष चाहे तो किसी स्त्री को वश में करने के लिए कर सकता है, या कोई स्त्री चाहे तो किसी पुरुष को वश में करने के लिए कर सकती है, इस प्रकार यह प्रयोग दोनों के लिए ही उपयोगी है।

८४–गर्भ रक्षा प्रयोग

सामग्री-पंचमुखी रुद्राक्ष, जल पात्र, भोजपत्र।

माला–विद्युत माला।

समय दिन या रात्रि का कोई भी समय।

आसन–पीले रंग का सूती आसन।

दिशा–उत्तर दिशा।

जप संख्या-इक्कीस हजार।

अवधि–पांच दिन।

मन्त्र-॥ ॐ यं हूं रं ॥

यन्त्र

यं: रः

प्रयोग–सबसे पहले भोजपत्र पर केसर से सम्बन्धित यन्त्र अंकित करे और उस पर मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त पंच मुखी रुद्राक्ष रख दे, इसके बाद उसकी सामान्य पूजाकर मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो भोजपत्र को मोड़कर ताबीज में बन्द कर काले धागे में पिरोकर स्त्री के कमर में बांध दे तो गर्भ रक्षा होती है और उसका गर्भ नहीं गिरता।

८५—सर्वतोभद्र प्रयोग

सामग्री—आज्ञा युक्त शालिग्राम, भोज पत्र, ताम्र पात्र, केसर, कस्तूरी, लाल चन्दन तथा कुंकुम।

माला—दिव्य माला।

समय—दिन या रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन।

जप संख्या—ग्यारह हजार।

अवधि—जो भी सम्भव हो।

मन्त्र—॥ ॐ ह्रां ह्रीं नमः ॥

प्रयोग—सबसे पहले भोज पत्र पर उपरोक्त बाकी पदार्थों को मिलाकर उसकी स्याही बनाकर सर्वतोभद्र यन्त्र अंकित करे और फिर उस पर आज्ञायुक्त शालिग्राम स्थापित करे और सामान्य पूजा कर मन्त्र जप प्रारम्भ करे।

यन्त्र

अ	इ	उ	ऐ
ओ	आ	ए	ऋ
अः	औ	ई	ह्रीं
हुं	क्लीं	श्रीं	ऊ

मन्त्र जप पूरा होने पर भोज पत्र को कांच की फ्रेम में मंढ़वा कर घर के या दुकान में ऐसे स्थान पर टांग ले, जहां अधिकतर लोगों की दृष्टि पड़ती हो और आभा युक्त शालिग्राम को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दे।

ऐसा करने से सर्वतोभद्र सिद्ध हो जाता है और उसके घर में सभी प्रकार से उन्नति होने लगती है और वह पूर्ण सुख भोगता है।

८६—राज्य सम्मान प्राप्त करने का प्रयोग

सामग्री—त्रिधातु मुद्रिका, जल पात्र, घृत का दीपक, अगरबत्ती, भोजपत्र।

माला—चन्दन माला।

समय—दिन या रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा—पूर्व दिशा।

जप संख्या—ग्यारह हजार।

अवधि—जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ॥ ॐ क्लीं नमः ॥

यन्त्र

॥ ॐ क्लीं नमः ॥

प्रयोग–सबसे पहले भोजपत्र पर केसर से राज्य सम्मान प्राप्त करने का यन्त्र अंकित कर दे और उसके ऊपर त्रिधातु मुद्रिका रख दे, जो कि मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, इसके बाद सामने अगरबत्ती व दीपक लगा दें तथा मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे। मन्त्र जप पूरा होने पर भोजपत्र को चांदी के तावीज में बन्द कर गले में धारण कर ले या बांहु पर बांध ले, और वह मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त त्रिधातु मुद्रिका किसी भी हाथ की उंगली में धारण कर ले।

ऐसा करने से राज्य से सम्बन्धित सभी बाधाएं दूर हो जाती है और शीघ्र ही उसे राज्य सम्मान प्राप्त होता है।

८७–जगदम्बा को प्रसन्न करने का प्रयोग

सामग्री–भोजपत्र, केसर, कुंकुम, मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त दुर्गा यन्त्र, जलपात्र।

माला—विद्युत माला।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन–पीले रंग का सूती आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–एक लाख।

अवधि–ग्यारह दिन।

मन्त्र— ॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

प्रयोग–यह प्रयोग किसी भी शुक्ल पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ करना चाहिए, सबसे पहले सामने लकड़ी के तख्ते पर पीला वस्त्र बिछाकर उसपर भोजपत्र रखकर उसपर दुर्गायन्त्र स्थापित करलेना चाहिए और उसके पास ही सिंहवाहिनी देवी का चित्र रख देना चाहिए, सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर मन्त्र-जप प्रारम्भ करे।

इस प्रयोग में रात्रि को कई प्रकार के दृश्य दिखाई पड़ेंगे, कई प्रकार की आवाजें भी सुनाई पड़ेंगी, परन्तु साधक को विचलित नहीं होना चाहिए और

बराबर मन्त्र जप करते रहना चाहिए।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो बारहवें दिन किसी कुंवारी कन्या को भोजन कराकर पीले वस्त्र दान में देने चाहिए, तथा उस रात्रि को पुनः साधना में बैठना चाहिए और प्रनिश्चित मन्त्र जप करते रहना चाहिए।

आधी रात के लगभग माँ जगदम्बा के साक्षात् दर्शन सम्भव है और इससे मनोवांछित वरदान प्राप्त होता है।

८८—हनुमान के साक्षात् दर्शन करने का प्रयोग

सामग्री-मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त महावीर यन्त्र, महावीर चित्र, सिंदूर, अगरबत्ती, तेल का दीपक।

माला—कार्य सिद्धि माला।

समय-रात का कोई भी समय।

आसन-लाल रंग का आसन।

दिशा—दक्षिण दिशा।

जप संख्या—सवा लाख।

अवधि— जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ॥ ॐ फ्रौं हनुमन्ताय प्रत्यक्ष दर्शनं देहि देहि फट् ॥

प्रयोग-सबसे पहले किसी भी मंगलवार की रात्रि को स्नान कर सामने आसन पर दक्षिण दिशा की तरफ मुंह कर बैठ जाय और सामने लाल वस्त्र बिछाकर उसपर मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त 'महावीर-यन्त्र' स्थापित कर दे, उनके पास ही हनुमान जी का चित्र रख दे, तथा अगरबत्ती व दीपक लगाकर यन्त्र और चित्र की सामान्य पूजा करे, तथा मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे नित्य हनुमान जी को गुड़ का भोग लगावे, प्रातःकाल वह भोग छोटे-छोटे बालकों में बांट दे।

नित्य मन्त्र जप करे, रात्रि में उसे कई प्रकार के डरावने दृश्य दिखाई पड़

सकते हैं, परन्तु साधक को चाहिए कि वह किसी भी प्रकार से विचलित न हो और निष्ठा पूर्वक मन्त्र जप करता रहे।

सवा लाख मन्त्र जप होते-होते भगवान महावीर के साक्षात् दर्शन के समय उनका उग्र रूप दिखाई पड़ सकता है, परन्तु साधक को चाहिए वह किसी भी प्रकार से विचलित न हो और दर्शन होने पर उनसे मनोवांछित वरदान प्राप्त कर ले।

८९—यक्षिणी सिद्ध करने का प्रयोग

सामग्री—दो शूकर दन्त, यक्षिणी यन्त्र, तेल का दीपक, जल पात्र, सिंदूर।

माला—कार्य सिद्धि माला।

समय रात्रि का कोई भी समय।

आसन-लाल रंग का सूती आसन।

दिशा-दक्षिण दिशा।

जप संख्या-सवा लाख।

अवधि—ग्यारह दिन।

मन्त्र- ॥ ॐ क्लीं श्रीं अलिमधा यक्षिणी प्रत्यक्ष
दर्शय कार्यं साधय फट् स्वाहा ॥

प्रयोग—यह प्रयोग किसी भी मंगलवार को प्रारम्भ किया जाता है, रात्रि को श्मशान में जाकर दक्षिण दिशा की तरफ मुंह कर साधक बैठ जाय, सामने यक्षिणी यन्त्र और उस पर दोनों शूकर दन्त रख दे, तथा सिंदूर से उन दोनों शूकर दन्तों को रंग दे, सामने तेल का दीपक लगाकर मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे, मन्त्र जप शुरू करने के बाद उसे अपने सामने कई प्रकार के भूत, प्रेत, पिशाच नाचते हुए दिखाई पड़ सकते हैं, परन्तु साधक को चाहिए कि वह अविचलित भाव से बराबर मन्त्र जप करता रहे।

ग्यारवें दिन जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो उस यन्त्र को तथा दोनों शूकर-

दन्तों को अपने घर ले आवे, तथा किसी लाल वस्त्र में बांधकर तिजोरी में रख दे।

जब प्रयोग करना हो तो अपने सामने यन्त्र रखकर उसपर थूकर दंत रखे, एक माला मन्त्र जप करते ही अतिरूपा यक्षिणी सामने प्रगट होती है और साधक उसे जो भी आज्ञा देता है, वह जल्दी से जल्दी पूरा करती है।

यह तीक्ष्ण प्रयोग है, अतः कच्चे दिल वाला साधक यह प्रयोग न करे।

६०—गई हुई वस्तु वापिस प्राप्त करने का प्रयोग

सामग्री – व्याघ्र नख, तेल का दीपक, जल पात्र।

माला—कार्य सिद्धि माला।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन–लाल रंग का ऊनी आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–इक्कीस हजार।

अवधि–पांच दिन।

मन्त्र— ॥ ॐ ऐं पापष्यि गत वस्तु प्राप्त्यर्थ फट् स्वाहा ॥

प्रयोग- यह प्रयोग किसी भी रविवार को प्रारम्भ किया जाता है, लाल वस्त्र बिछाकर उस पर व्याघ्र-नख रख देना चाहिए और सिंदूर से उस पर तिलक कर तेल का दीपक लगाकर मन्त्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

इक्कीस हजार मन्त्र जप करने पर वे व्याघ्र नख सिद्ध हो जाते हैं, जब उनको प्रयोग करना हो तो एक कागज पर वह सब विवरण लिख लेना चाहिए, जो गई हुई वस्तु या चुराई गई वस्तु से सम्बन्धित हो उस कागज के साथ व्याघ्र नख लपेट कर अपने सिरहाने रख कर साधक सो जाय, तो साधक को स्वप्न में खोई हुई वस्तु का पता चल जाता है और उसे साफ-साफ दिखाई देता है, कि

वह खोई हुई वस्तु कहां पर है, किस जगह है, किसने चुराई है और किस प्रकार से प्राप्त की जा सकती है।

९१–विदेश यात्रा जाने का प्रयोग

सामग्री—दक्षिणावर्ती शंख, केसर, जल पात्र, पुष्प, घृत का दीपक, अगरबत्ती।

माला—स्फटिक माला।

समय-दिन रात का कोई भी समय।

आसन-सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा-पश्चिम दिशा।

जप संख्या– ग्यारह हजार।

अवधि—पांच दिन।

मन्त्र— ॥ ॐ अनंग वल्लभाये विदेश गमनाम कार्यं सिद्धयर्थं नमः ॥

प्रयोग-यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ करना चाहिए, सामने सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर दक्षिणावर्ती शंख रखकर केसर से स्वस्तिक चिन्ह बनाकर उसकी पूजा कर सामने अगरबत्ती व दीपक लगाना चाहिए और फिर मन्त्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तो उसी सफेद वस्त्र में दक्षिणावर्ती शंख को बांध कर अपने सन्दूक में रख देने से सभी बाधाए दूर हो जाती है और शीघ्र ही वह विदेश गमन कर लेता है।

९२–प्रीतिवर्द्धक प्रयोग

सामग्री—कामरूप मणि, भोजपत्र, केसर, घी का दीपक, जल पात्र।

माला—कार्य सिद्धि माला।

समय-दिन या रात का कोई भी समय ।

आसन-सफेद रंग का सूती आसन ।

दिशा-पूर्व दिशा ।

जप संख्या-ग्यारह हजार ।

अवधि-पांच दिन ।

मन्त्र— ॥ ॐ कामोनंग पुष्पसर सह कन्दर्पो मीन केतन
कामदेवाय देवाय प्रसन्नो भव मे प्रभो ॥

यन्त्र

४१	१८	२
११	१०	५
७	२३	६

प्रयोग-सबसे पहले भोजपत्र पर 'प्रीतिवर्द्धक यन्त्र' केसर से अंकित करे, और उस पर कामरूप मणि स्थापित कर दे, सामने अगरबत्ती व दीपक लगा ले, तथा कामरूप मणि पर गुलाब का पुष्प या अन्य कोई पुष्प चढ़ावे, इसके बाद मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे ।

मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पूर्व यह स्पष्ट करे, कि किसकी प्रीति बढ़ाने के लिए प्रयोग किया जा रहा है, अर्थात् वह कहे कि मैं यह चाहता हूं, कि अमुक की प्रीति मेरे प्रति दिनों दिन बढ़ती ही रहे और मैं जिस प्रकार से चाहूं उसी प्रकार वह करे ।

इस प्रकार पांच दिन तक मन्त्र जप करे, मन्त्र जप पूरा हो जाय तब उस भोज पत्र में कामरूप मणि को लपेट कर अपने सन्दूक में रख दे, ऐसा करने पर सामने वाले के हृदय में जरूरत से ज्यादा चाह और स्नेह बढ़ जाता है, तथा

भविष्य में उसके हृदय में जरूरत से ज्यादा प्रीति बढ़ती रहती है।

यह प्रयोग प्रेमी अपनी प्रेमिका के हृदय में अपने प्रति चाह वृद्धि करने के लिए कर सकता है, पति अपनी पत्नी के लिए या पत्नी अपने पति के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर सकती है, जिससे घर में प्रेम वृद्धि बनी रहे, इस प्रकार यह प्रयोग कई दृष्टियों से अनुकूल है।

९३–नामर्दी (नपुंसकता) दूर करने का प्रयोग

सामग्री–मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त अनंगयन्त्र, शुद्ध घृत का दीपक, अगरबत्ती।

माला—स्फटिक माला।

समय–दिन रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद सूती आसन।

दिशा–उत्तर दिशा।

जप संख्या—ग्यारह हजार।

अवधि–तीन दिन।

मन्त्र— ॥ ॐ श्रीं अनंगाय ह्रीं नमः ॥

यन्त्र
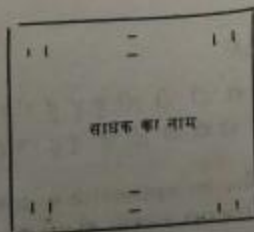
प्रयोग–किसी भी शुक्रवार से यह प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, अपने सामने वस्त्र बिछाकर उस पर भोज पत्र रख देना चाहिए और कामदेव यन्त्र को कुंकुम या केसर से अंकित करना चाहिए, इसके बाद इस भोज पत्र पर मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त अनंग यन्त्र (कामदेव यन्त्र) स्थापित कर उस पर केसर लगा-कर पुष्प चढ़ाने चाहिए और उपरोक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करना चाहिए, मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पूर्व अगरबत्ती व दीपक लगा लेना चाहिए।

पूरा प्रयोग समाप्त होने के बाद वह भोजपत्र किसी डिबिया में बन्द करके अपने घर के बाक्स में रख देना चाहिए और वह अनंग यन्त्र धारण कर ले।

ऐसा करने से व्यक्ति की नामर्दी दूर हो जाती है और वह किसी भी प्रकार की कमजोरी या बीमारी को दूर कर पूर्ण पुरुष बन जाता है।

६४–महाकाली प्रयोग

सामग्री–पारे की बनी मन्त्र सिद्ध माला, महाकाली यन्त्र, महाकाली चित्र तेल का दीपक, जल पात्र, सिंदूर गुड़ का बना प्रसाद।

माला—रजत पारद माला।

समय—रात का कोई भी समय।

आसन–सफेद सूती आसन।

दिशा–दक्षिण दिशा।

जप संख्या—सवा लाख।

अवधि–जो भी सम्भव हो

मन्त्र— ।। क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं हुं दक्षिणे
कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्वाहा ।।

प्रयोग—यह प्रयोग दस महाविद्याओं में से महत्वपूर्ण प्रयोग है और महाकाली के दर्शन के लिए इससे उच्चकोटि का और कोई प्रयोग नहीं है, इस

प्रयोग से कई साधकों ने माँ काली के दर्शन किये है, शत्रुओं पर हावी होने के लिए शत्रु संहार के लिए इससे बढ़कर और कोई प्रयोग इस संसार में नहीं है।

सर्व प्रथम काली यन्त्र चित्र को स्नान कराकर उसे पारे की माला पहिना दे .फिर नित्य रात्रि को रजत पारद माला से मन्त्र जप करना चाहिए और जब प्रयोग समाप्त हो जाय, तब किसी एक कन्या को भोजन करा देना चाहिए, साधना के बीच में यदि भयानक दृश्य दिखाई दे तो किसी प्रकार की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है. भूत, प्रेत, पिशाच आदि दोष दूर करने, काली के दर्शन करने तथा समस्त प्रकार की कार्य सिद्धि के लिए यह श्रेष्ठतम प्रयोग है।

६५–तारा महाविद्या प्रयोग

सामग्री–मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त तारा यन्त्र, तारा चित्र, गुटका माला तेल का दीपक, अगरबत्ती।

माला–पारद माला।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन–गुलाबी रंग का ऊनी आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या - सवा लाख।

अवधि – जो भी सम्भव हो।

मन्त्र– ॥ ऐं ओं ह्रीं क्लीं हुं फट् ॥

प्रयोग–यह प्रयोग आकस्मिक धन प्राप्ति एवं आर्थिक उन्नति के लिए किया जाता है, किसी भी बुधवार या सोमवार से यह प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, सबसे पहले अपने कमरे को गुलाबी रंग से पोत देना चाहिए, साधक को स्वयं को भी गुलाबी धोती पहननी चाहिए, तथा दीपक करते समय रुई को पहले से ही गुलाबी रंग में रंग कर सुखा देनी चाहिए।

तारा चित्र पर युक्त माला पहना देनी चाहिए और फिर पारद माला से मन्त्र जप प्रारम्भ करना चाहिए। साधना के बीच में विभिन्न प्रकार की आवाजें और दृश्य अनुभव हो सकते हैं, पर साधक को घबराना नहीं चाहिए। साधना समाप्ति के समय मां तारा प्रत्यक्ष रूप से दर्शन देती है और प्रसन्न होकर वरदान देती है।

तारा साधना समाप्त होने के बाद उसके सिरहाने नित्य कुछ द्रव्य स्वतः ही प्राप्त हो जाता है, कई साधकों के सिरहाने नित्य दो-तीन तोला स्वर्ण देखा गया है।

वस्तुतः यह प्रयोग आर्थिक उन्नति और जीवन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की पूर्णता के लिए श्रेष्ठतम प्रयोग है। पुत्र प्राप्ति, परीक्षा में सफलता, शीघ्र विवाह और समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए भी इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

६६–षोडशी प्रयोग

सामग्री—मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त षोडशी यन्त्र, षोडशी चित्र, घृत का दीपक, अनरवत्ती जल पात्र।

माला—पुष्प पारद माला।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन

दिशा—उत्तर दिशा।

जप संख्या—सवा लाख।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ॥ ह्रीं क-ए-ई-ल-ह्रीं हसकहलह्रीं सकल ह्रीं ॥

प्रयोग-षोडशी प्रयोग मुख्यतः मोक्ष प्राप्ति और उत्कृष्ठ कोटि के व्यापार और आर्थिक उन्नति के लिए किया जाता है, कहते हैं, कि षोडशी प्रयोग के बाद सामान्य व्यापारी भी उच्च स्तर का व्यापारी बन जाता है, आर्थिक दृष्टि से

इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने के बाद किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती, वस्तुतः यह प्रयोग अपने आप में सर्वांगपूर्ण व द्वितीय है, वहीं दूसरी ओर मोक्ष प्राप्ति में भी यह पूर्ण रूप से सहायक है।

सबसे पहले किसी भी बुधवार को यह प्रयोग प्रारम्भ करे, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त षोडशी यन्त्र व षोडशी चित्र की पूजा करे, तथा घी का दीपक लगा कर मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे।

मन्त्र जप पूरा होने पर कुंवारी कन्या को भोजन करा दे, और वह यन्त्र एवं चित्र अपने सन्दूक में स्थापित कर दे।

ऐसा करने से प्रयोग सम्पन्न होता है, प्रयोग की समाप्ति पर भगवती षोडशी के दर्शन हो जाते हैं।

वस्तुतः यह प्रयोग अपने आप में अद्भुत सफलतादायक है।

९७—भुवनेश्वरी प्रयोग

सामग्री—मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त भुवनेश्वरी यन्त्र, भुवनेश्वरी चित्र, घृत का दीपक, अगरबत्ती, जल पात्र।

माला—फलयुक्त पारद माला।

समय—रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा—पूर्व दिशा।

जप संख्या—सवा लाख।

अवधि—जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ॥ ह्रीं ॥

प्रयोग—सर्वप्रथम सफेद वस्त्र पर भुवनेश्वरी यन्त्र व चित्र को स्थापित कर उसकी पूजा करनी चाहिए, सामने अगरबत्ती व दीपक लगा लेना चाहिए तथा पुष्प

के बने प्रसाद का भोग लगाना चाहिए इसके बाद मन्त्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

मन्त्र जप समाप्त होते-होते भुवनेश्वरी के दर्शन सम्भव है और उसकी मनः इच्छा पूरी हो जाती है।

वस्तुतः यह प्रयोग आर्थिक उन्नति के लिए किया जाता है, दरिद्रता नाश के लिए इससे बड़ा प्रयोग और कोई नहीं है, यदि सात जन्मों की दरिद्रता भी हो तब भी इस प्रयोग से समाप्त हो जाती है, और व्यक्ति धन धान्य समृद्धि प्राप्त कर पूर्ण सुख प्राप्त करता है।

६८–छिन्नमस्ता प्रयोग

सामग्री–मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त छिन्न मस्ता यन्त्र, छिन्नमस्ता चित्र, तेल का दीपक, जल पात्र आदि।

माला–रक्त प्रवाल माला।

समय–रात का कोई भी समय।

आसन–काले रंग का सूती आसन।

दिशा–दक्षिण दिशा।

जप संख्या–सवा लाख।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र– ।। श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वैरोचनोये हुं हुं फट् स्वाहा ।।

प्रयोग–सबसे पहले साधक सर्वथा नग्न होकर घर के एकान्त कक्ष में छिन्नमस्ता यन्त्र व चित्र की पूजा करे, पूजा करते समय किसी प्रकार का वस्त्र धारण न करें, छिन्नमस्ता देवी के सामने कच्चे नारियल के गिरियों का भोग लगावे और और मन्त्र जप प्रारम्भ दे, मन्त्र जप समाप्त होते-होते प्रचण्ड रूपा छिन्नमस्ता के दर्शन हो जाते है, परन्तु साधक को चाहिए कि वह घबराये नहीं और अपने आपको दृढ़ रख कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

यह साधना मारण मोहन उच्चाटन स्तम्भन आदि के लिए अद्वितीय है, इसके साथ ही प्रचण्ड शत्रु को भी समाप्त करने के लिए यह प्रयोग अनुकूल है।

६६–त्रिपुर भैरवी प्रयोग

सामग्री–मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त त्रिपुर भैरवी यन्त्र, त्रिपुर भैरवी चित्र तेल का दीपक जल पात्र।

माला-स्फटिक माला।

समय—रात का कोई भी समय।

आसन–गुलाबी रंग का सूती आसन।

दिशा–उत्तर दिशा।

जप संख्या–इक्कीस हजार।

अवधि–जो भी सम्भव हो।

मन्त्र—॥ ह् सैं ह् स करी ह् सैं।

प्रयोग–यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है, इससे व्यक्ति अत्यधिक सुन्दर और कामदेव के समान प्रभाव युक्त बन जाता है, वह किसी से भी मिलता है, या बातचीत करता है, तो सामने वाला स्वतः ही प्रभावित होकर उसका अनुगामी बन जाता है, अपने शरीर को सुन्दर बनाने सन्तानोत्पत्ति योग्य यौवनवान बनाने तथा समस्त संसार को अपने अनुकूल बनाने में यह प्रयोग महत्वपूर्ण है।

सबसे पहले किसी भी मंगलवार को यह प्रयोग प्रारम्भ करे, त्रिपुर भैरवी यन्त्र व चित्र को स्नान कराकर सिन्दूर का तिलक करे और फिर दीपक लगाकर मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे।

मन्त्र जप पूरा होते-होते व्यक्ति को भगवती त्रिपुर सुन्दरी के दर्शन हो जाते है और वह जो भी वरदान मांगता है, वह प्राप्त होता है।

१००–धूमावती प्रयोग

सामग्री–मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त धूमावती यन्त्र, धूमावती देवी का चित्र, तेल का दीपक जल पात्र ।

माला–हड्डियों की माला ।

समय–रात का कोई भी समय ।

आसन–कुशासन ।

दिशा–दक्षिण दिशा ।

जप संख्या–सवा लाख ।

अवधि–जो भी सम्भव हो ।

मन्त्र—। धूं धूं धूमावती ठः ठः ॥

प्रयोग–सबसे पहले धूमावती यन्त्र व चित्र को जल से स्नान कराकर सिंदूर का तिलक लगाकर स्थापित करे और सामने तेल का दीपक लगावे, इसके बाद हड्डियों की माला से मन्त्र जप प्रारम्भ करे ।

यह प्रयोग श्मशान प्रयोग है, अतः श्मशान में जाकर ही इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए, पर यदि यह सम्भव न हो तो किसी मन्दिर में नदी के किनारे अथवा निर्जन स्थान पर ही यह प्रयोग सम्पन्न किया जाय यदि घर में करना हो तो अपने आसन के नीचे श्मशान से लाकर राख बिछा देनी चाहिए उसके ऊपर आसन बिछा करके ही मन्त्र जप करना चाहिए ।

रोग मुक्ति, शत्रु नाश तथा जीवन में निर्भयता के लिए यह श्रेष्ठतम प्रयोग है ।

१०१–बगलामुखी प्रयोग

सामग्री–मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त बगलामुखी यन्त्र, बगलामुखी देवी का चित्र, तेल का दीपक जलपात्र आदि ।

माला—हल्दी की माला।

समय—रात का कोई भी समय।

आसन—पीले रंग का सूती आसन।

दिशा—पश्चिम दिशा।

जप संख्या—सवा लाख।

अवधि—जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ॥ ॐ ह्लीं बगलामुखी, सर्व दुष्टानां वाच मुख पदं
स्तम्भय जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

प्रयोग—इसमें साधक पीले वस्त्र पहन करके ही साधना में बैठना है, दीपक के लिए रूई को भी पहले पीले रंग में रंग कर सुखा देनी चाहिए, देवी पर जो पुष्प चढ़ाये जाते हैं, वे भी पीले रंग के हों, तथा बेसन की बनी हुई वस्तु का ही भोग लगाया जाता है।

किसी भी रविवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ करे, और पूर्ण निष्ठा के साथ मन्त्र जप करे, मन्त्र जप समाप्त होते-होते अवश्य ही भगवती बगला मुखी के दर्शन सम्भव है, बीच में किसी प्रकार का व्यवधान आवे या भयानक वस्तु दिखाई दे तो साधक को विचलित नहीं होना चाहिए।

साधना समाप्ति पर किसी एक कुंवारी कन्या को बेसन की बनी वस्तु का भोजन कराकर पीले रंग के वस्त्र दान में देने चाहिए, ऐसा करने से यह प्रयोग सफल हो जाता है।

शत्रु संहार के लिए और मुकदमे में सफलता तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए यह सर्वश्रेष्ठ प्रयोग कहा जाता है।

१०२—मातंगी प्रयोग *

सामग्री—मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त मातंगी यन्त्र, मातंगी देवी का चित्र, तेल का दीपक, जल पात्र, जवा कुसुम, आदि।

माला–कुंकुम माला।

समय–रात्रि का कोई भी समय।

आसन–गुलाबी रंग का सूती आसन।

दिशा–पश्चिम दिशा।

जप संख्या–ग्यारह हजार।

अवधि—जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ।। ॐ ह्रीं क्लीं हुं मातंग्यै फट् स्वाहा ।।

प्रयोग–यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूल है और समस्त प्रकार की सिद्धि के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है, इसमें कुंकुम की बनी माला का ही प्रयोग होता है।

किसी भी सोमवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ करे, सबसे पहले मातंगी यन्त्र मातंगी देवी के चित्र को स्नान कराकर कुंकुम का तिलक करे, जवा कुसुम चढ़ावे और फिर मन्त्र जप प्रारम्भ करे।

मन्त्र जप समाप्त होते-होते भगवती मातंगी के प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव होते हैं इस प्रयोग से मूर्ख व्यक्ति भी पंडित हो जाता है, निर्धन धनवान बनता है, तथा अल्पायु व्यक्ति पूर्ण आयु भोगता है, शरीर में किसी प्रकार का रोग हो तो इस प्रयोग से दूर हो जाता है।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूल और सुखदायक है।

१०३–कमला प्रयोग

सामग्री–मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कमला यन्त्र, कमला देवी का चित्र, घी का दीपक, अगरबत्ती, जल पात्र, आदि।

माला केसर माला।

समय-रात्रि का कोई भी समय।

आसनसफेद रंग का सूती आसन।

दिशा-उत्तर दिशा।

जप संख्या-सवा लाख।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र— ।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह् सौः जगत्प्रसूत्यै नमः ।।

प्रयोग-आर्थिक उन्नति एवं पूर्ण समृद्धि के लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है, सबसे पहले यन्त्र और चित्र को जल सेस्नान करा दे, केसर का तिलक करना चाहिए, फिर दीपक लगाकर मन्त्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए, मन्त्र जप समाप्त होते-होते भगवती कमला के साक्षात दर्शन हो जाते हैं।

प्रयोग समाप्त होने पर किसी एक कुंवारी कन्या को भोजन करावे, और उसे यथोचित दान दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे, ऐसा करने पर यह प्रयोग सम्पन्न होता है।

धन, धान्य, पराक्रम, सुख, पुत्र, पौत्र, भवन, कीर्ति, आयु, यश, वाहन आदि के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है।

१०४–दुर्गा प्रयोग

सामग्री-मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त दुर्गा यन्त्र, दुर्गा चित्र, घृत का दीपक
माला-स्फटिक माला।

समय-रात का कोई भी समय।

सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा-उत्तर दिशा।

जप संख्या-सवा लाख।

अवधि-जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ॥ दुं दुर्गायै नमः ॥

प्रयोग–भगवती दुर्गा के साक्षात दर्शन के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है, शुक्ल पक्ष की पंचमी या चतुर्दशी को यह प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, और एक निष्ठता से मन्त्र जप करने पर दुर्गा के दर्शन अवश्य ही सम्पन्न होते हैं।

प्रयोग की समाप्ति के बाद किसी एक कुंवारी कन्या को भोजन करा कर यथोचित दान दक्षिणा देने से प्रयोग सम्पन्न होता है।

१०५–सूर्य प्रयोग

सामग्री–मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सूर्य यन्त्र चित्र, घृत का दीपक, जल पात्र सफेद पुष्प आदि।

माला-स्फटिक माला।

समय—दिन रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा—पूर्व दिशा।

जप संख्या–सवा लाख।

अवधि—जो भी सम्भव हो।

मन्त्र- ॥ ॐ श्रीं घृणिः सूर्य्य आदित्यः ॥

प्रयोग–सबसे पहले सूर्ययंत्र चित्र, को जल से स्नान कराकर केसर का तिलक करे और फिर दीपक अगरबत्ती लगाकर मन्त्र जप प्रारम्भ करे, सवा लाख मन्त्र जपने पर यह प्रयोग सम्पन्न होता है, प्रयोग संपन्न होने के बाद पांच कुमार बालकों को भोजन कराकर यथोचित दान दक्षिणा देकर उन्हें सन्तुष्ट करना चाहिए।

किसी भी प्रकार की नेत्र पीड़ा या आंखों की रोशनी कमजोर हो अथवा आंख से सम्बन्धित कोई रोग हो तो इस प्रयोग से अवश्य ही समाप्त हो जाता है, वस्तुतः यह प्रयोग दृष्टि की पूर्णता के लिए श्रेष्ठतम है।

ये सभी प्रयोग अपने आप में अत्यन्त गोपनीय और पूर्ण प्रामाणिक हैं परन्तु साधना में सफलता असफलता साधक के विवेक पर निर्भर है, साधक पूरी निष्ठा के साथ प्रयोग करे तो अवश्य ही उसे सफलता मिलती है।

सामग्री विवरण

प्रयोग संख्या	प्रयोग नाम	सामग्री	न्योछावर रु०
१-	कल्याणदायक गणपति प्रयोग	मूंगे की माला	१५०)
		चन्दन की माला	२१०)
		गणपति चित्र	३०)
२-	मनोकामना सिद्धि प्रयोग	श्वेतार्क गणपति	६००)
		रक्त चन्दन की माला	२१०)
३-	विजय गणपति प्रयोग	विजय गणपति विग्रह	६००)
४-	सर्व सिद्धिदायक प्रयोग	मूंगा रत्न	९०)
		मूंगे की माला	१५०)
५-	सर्व विघ्न नाशक प्रयोग	मूंगे की माला	१५०)
६-	ऋद्धि सिद्धि दायक प्रयोग	श्री यन्त्र	३३०)
		कमल गट्टे की माला	१२०)
७-	दरिद्रता नाशक लक्ष्मी प्रयोग	मूंगे की माला	१५०)
८-	नौकरी प्राप्त करने का प्रयोग	मूंगे की माला	१५०)
९-	सर्व उपद्रव नाशक प्रयोग	हनुमानजी का चित्र	५१)
१०-	पितृ दोष निवारण प्रयोग	लघु नारियल	१२०)
११-	व्यापार द्वारा धन प्राप्ति प्रयोग	कुबेर यन्त्र	३३०)
		स्फटिक माला	४००)
१२-	व्यापार बन्ध दूर करने का प्रयोग	मूंगे की माला	१५०)
१३-	व्यापार बांधने का प्रयोग	रुद्राक्ष की माला	३३०)
१४-	विद्या वर्धक प्रयोग	सरस्वती चित्र	५१)
		गोमती चक्र	९०)

१५- इन्टरव्यू में सफलता प्राप्त करने का प्रयोग	स्फटिक माला	४००)
१६- चोरी ज्ञात करने का प्रयोग	शूकर दन्त	१८०)
	हकीक माला	३००)
१७- मुकदमे में सफलता प्राप्त करने का प्रयोग	हकीक माला	२१०)
१८- सर्व कार्य साधन यन्त्र प्रयोग	मूंगे की माला	२१०)
१९- जुए में जीतने का प्रयोग	हीरा शंख	२१०)
	शंख माला	३००)
२०- कैद से छुड़ाने का प्रयोग	मूंगे की माला	२१०)
२१- आकर्षण प्रयोग	स्फटिक माला	४००)
२२- मन्त्र द्वारा आकर्षण प्रयोग	हकीक माला	३००)
	शंख माला	३००)
२३- सर्व आकर्षण प्रयोग	सफेद कनेर की कलम	११०)
	भोज पत्र	३०)
	मूंगा रत्न	६०)
२४- दूर स्थान पर रहने वाले व्यक्ति को बुलाने का प्रयोग	गोरोचन	९०)
	रुद्राक्ष की माला	३३०)
२५- कामदेव प्रयोग	स्फटिक माला	४००)
२६- मोहिनी प्रयोग	मूंगे की माला	२१०)
२७- वशीकरण प्रयोग	शंख माला	३००)
२८- चमत्कारिक सम्मोहन प्रयोग	सियार सिंगी	५१०)
२९- सर्वजन वशीकरण	कांसे का पात्र	९०)
	सियार सिंगी	२२०)

		हकीक माला	२१०)
		लाल रंग का आसन	८०)
३०-	त्रैलोक्य वशीकरण प्रयोग	हकीक माला	२१०)
३१-	तकाजा दूर करने का प्रयोग	ताम्बे का पात्र	१५०)
		हत्था जोड़ी	२२०)
		रत्न माला	६००)
		सफेद सूती आसन	८०)
३२-	सेवक वशीकरण प्रयोग	हत्था जोड़ी	२२०)
		हकीक माला	२१०)
		सफेद सूती आसन	८०)
३३-	स्वामी वश्यकर प्रयोग	सिंदूर १०० ग्राम	२०)
		दो मुखी रुद्राक्ष	१२०)
		मूंगे की माला	२१०)
३४-	व्यापार बाधा दूर करने का प्रयोग	सियार सिंगी	२२०)
		सिंदूर सौ ग्राम	२०)
		हकीक माला	२१०)
		सफेद सूती आसन	८०)
३५-	स्त्री वशीकरण प्रयोग	कामरूप मणि	३३०)
		मूंगे की माला	२१०)
		सफेद सूती आसन	८०)
३६-	पुरुष वशीकरण प्रयोग	सियार सिंगी	२२०)
		सिंदूर १०० ग्राम	२०)
		हकीक माला	२१०)
३७-	पति वशीकरण प्रयोग	सियार सिंगी	२२०)
		सिन्दूर सौ ग्राम	२०)
		हकीक माला	२१०)
३८-	सौभाग्य वृद्धि प्रयोग	सौभाग्य यन्त्र	३००)

		तुलसी माला	६०)
३९	पुत्र प्राप्ति प्रयोग	पुत्रेष्टि यन्त्र	१००)
		स्फटिक माला	३३०)
४०-	गर्भ क्षरण रोकने का प्रयोग	मूंगा रत्न	६०)
		हकीक माला	२१०)
		लाल रंग का सूती आसन	६०)
४१	ज्वर उतारने का प्रयोग	कार्य सिद्धि माला	१५०)
४२	बा ज्वर नाशक प्रयोग	शिशु स्वास्थ्य यन्त्र	१००)
		मूंगे की माला	१२०)
४३-	शत्रु बुद्धि स्तम्भन प्रयोग	हकीक पत्थर-५	२५०)
		शंख माला	१५०)
४४-	शत्रु मुख स्तम्भन प्रयोग	बगला मुखी देवी का यन्त्र चित्र	४५०)
		हल्दी की माला	२५०)
४५-	शत्रु स्तम्भन प्रयोग	पीले रंग की धोती	१५०)
४६-	शत्रु उच्चाटन प्रयोग	सियार सिंगी	२२०)
४७-	सौत से पति का उच्चाटन प्रयोग	हकीक पत्थर २-	१००)
		नीले रंग का सूती आसन	८०)
४८-	कुलटा स्त्री से पर पुरुष का उच्चाटन प्रयोग	हकीक माला	२१०)
४९-	काम उच्चाटन प्रयोग	गोमती चक्र ५-	१५०)
५०-	त्रैलोक्य उच्चाटन प्रयोग	एकाक्षी नारियल	३००)
		रुद्राक्ष माला	३३०)
५१-	नर नारी विद्वेषण प्रयोग	हल्दी की माला	३३०)

५२-	शत्रु विद्वेषण प्रयोग	हत्था जोड़ी	३००)
५३-	मारण प्रयोग	मरे हुए सर्प की हड्डियों की माला	५००)
५४-	शत्रु मारण प्रयोग	अन पात्र	६०)
५५-	माथा सीसी दूर करने का प्रयोग	छोटा शूकर दन्त	२२०)
५६-	पीलिया रोग दूर करने का प्रयोग	लघु नारियल	१२०)
५७-	दाढ़ पीड़ा दूर करने का प्रयोग	पीतल का दीपक	३०)
५८-	दुखती आंखों का प्रयोग	पंच मुखी रुद्राक्ष	५०)
५९-	बवासीर रोग दूर करने का प्रयोग	लोबान धूप सौ ग्राम	६०)
६०-	सर्प कीलने का प्रयोग	चांदी का बना हुआ सर्प	३००)
६१-	सांप बिच्छू के जहर को झाड़ने का प्रयोग	शुद्ध अगरबत्ती पैकेट	१५)
६२-	मिरगी को दूर करने का प्रयोग	पंचमुखी रुद्राक्ष	५०)
६३-	बुखार उतारने का प्रयोग	गोमती चक्र	६०)
६४	सुख प्रसव प्रयोग	बिल्ली की नाल	१५०)
६५-	ग्रह दोष निवारण प्रयोग	नवग्रह यन्त्र	२१०)
६६-	जादू टोना उतारने का प्रयोग	बड़ा शूकर दन्त	३००)
६७-	बाल रक्षा प्रयोग	दिव्य माला	२१०)
		शूकर दन्त	११०)
६८-	जुए में जीतने का प्रयोग	स्वर्णाकर्षण गुटिका	३३०)

		विद्युत माला	२१०)
६९-	अटूट भण्डार प्रयोग	श्री यन्त्र	३३०)
		कनक धारा यन्त्र	३३०)
		कुबेर यन्त्र	३३०)
		केसर सामान्य माला में	३०)
७०-	पृथ्वी से गड़ा धन निकालने का प्रयोग	कुबेर पात्र	३१०)
७१-	व्यापार वर्धक प्रयोग	सफेद रंग का ऊनी आसन	१२०)
७२-	सर्व दुख नाशक प्रयोग	कामरूप मणि	३३०)
७३-	सद्गुरु दर्शन प्रयोग	सद्गुरु चित्र	१०१)
७४-	खेती के फलने फूलने का प्रयोग	बड़ा मोती शंख	२१०)
		मध्यम मोती शंख	११०)
		छोटा मोती शंख	६०)
		कार्य सिद्धि माला	१५०)
७५-	स्वप्न में देवता से बात करने का प्रयोग	स्वप्नेश्वरी देवी का चित्र	६०)
७६-	दिखाई न पड़ने का प्रयोग	नवरत्न की सामान्य मुद्रिका	२१००)
		विद्युत माला	२१०)
		लाल रंग का ऊनी आसन	१२०)
७७-	भूख प्यास न लगने : प्र योग	रजत पारद की पांच गोलियां	२५०)
७८-	पक्षी शब्द ज्ञान प्रयोग	पांच विभिन्न पक्षियों के पंख	२१)
		वैजन्ती माला	२१०)

७९-	पाप नाशन प्रयोग	पारद शिवलिंग	१५००)
८०-	कुमारियों को श्रेष्ठ पति प्राप्त करने का प्रयोग	स्फटिक शिव लिंग लघु नारियल	६००) १५०)
८१-	दरिद्रता निवारण प्रयोग	नर्मदेश्वर शिव लिंग	२१०)
८२-	सर्व सिद्धि दायक प्रयोग	रुद्राक्ष माला	३५०)
८३-	प्रबल वशीकरण प्रयोग	कामदेव हत्था विद्युत माला	३५०) २१०)
८४-	गर्भ रक्षा प्रयोग	पचमुखी रुद्राक्ष	६०)
८५-	सर्वतो भद्र प्रयोग	आभामुक्त शालिग्राम	२१०)
८६-	राज्य सम्मान प्राप्त करने का प्रयोग	त्रिधातु मुद्रिका चन्दन माला	२१०) २१०)
८७-	जगदम्बा को प्रसन्न करने का प्रयोग	दुर्गा यन्त्र	३००)
८८-	हनुमान के साक्षात् दर्शन का प्रयोग	महावीर यन्त्र चित्र कार्य सिद्धि माला	३००) २१०)
८९-	यक्षिणी सिद्ध करने का प्रयोग	यक्षिणी यन्त्र	३३०)
९०-	गई हुई वस्तु वापिस प्राप्त करने का प्रयोग	व्याघ्र नख	३००)
९१-	विदेश यात्रा जाने का प्रयोग	दक्षिणावर्ती शंख	६००)
९२-	प्रीतिवर्धक प्रयोग	कामरूप मणि	३३०)
९३-	नामर्दी दूर करने का प्रयोग	अनंग यन्त्र	६००)
९४-	महाकाली प्रयोग	महाकाली यन्त्र चित्र पारे की बनी मन्त्र सिद्ध माला रजत पारद माला	२४०) ४१०) ५१०)

९५-	तारा महा विद्या प्रयोग	तारा यन्त्र चित्र	
		मुण्डक माला	२४०)
			५१०)
		पारद माला	
९६-	षोडशी प्रयोग	षोडशी यन्त्र चित्र	१००)
		पुष्प पारद माला	२४०)
			५१०)
९७-	भुवनेश्वरी प्रयोग	भुवनेश्वरी यन्त्र चित्र	२४०)
		फलयुक्त पारद माला	५१०)
९८-	छिन्नमस्ता प्रयोग	छिन्न मस्ता यन्त्र चित्र	२४०)
		रक्त प्रवाल माला	३१०)
९९-	त्रिपुर भैरवी प्रयोग	त्रिपुर भैरवी यन्त्र चित्र	२४०)
		गुलाबी रंग का सूती आसन	११०)
१००	धूमावती प्रयोग	धूमावती यन्त्र चित्र	२४०)
		कुश का आसन	६०)
१०१	बगला मुखी प्रयोग	बगला मुखी यन्त्र चित्र	२४०)
		हल्दी की माला	३३०)
		पीले रंग का सूती आसन	८०)
१०२	मातंगी प्रयोग	मातंगी यन्त्र चित्र	२४०)
		कुंकुम माला	३३०)
१०३-	कमला प्रयोग	कमला यन्त्र चित्र	२४०)
		केसर माला	३३०)
१०४-	दुर्गा प्रयोग	दुर्गा यन्त्र चित्र	२४०)
		स्फटिक माला	३३०)
१०५-	सूर्य प्रयोग	सूर्य यन्त्र, सूर्य चित्र	२४०)

उपरोक्त सभी सामान साधु, सन्यासियों से सीधे प्राप्त होता है, वहां केवल उन्हें मन्त्र सिद्ध करके भेजा जाता है, इसलिए यह व्यापार नहीं है, बल्कि साधकों को सुविधायें देने का हमारी तरफ से प्रयास है. अपनी समझ से हम साधु सन्तों से प्रामाणिक और सही सामग्री ही प्राप्त करते हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि या न्यूनता रह जाय तो दुर्लभ सामग्री केन्द्र किसी भी प्रकार उत्तरदायी नहीं होगा सामग्री वी.पी. से मंगा सकते है, डा. खर्च अलग से।

जीवन में
सभी प्रकार के कर्जों से मुक्ति पाने का उपाय क्या है?
दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित कर देने की क्रिया
ऋण मोचन दीक्षा
जिससे
जीवन के चक्र व्यूह के सात चक्रों
• ऋण • दुख • दैन्य
• निर्धनता • तिरस्कार
• कलह • पीड़ा
को
निश्चयात्मक ढंग से समाप्त करने की अचूक क्रिया
प्रहारात्मक प्रक्रिया से सात क्रमों में केवल समर्थ और सक्षम
गुरु द्वारा प्रदान की जाने वाली दुर्लभ दीक्षा
शास्त्रों में गुह्य एक अलौकिक प्रक्रिया सर्वप्रथम
पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा रहस्योद्घाटित . . .
ऋण मोचन दीक्षा
-: सम्पर्क :-
३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली- ३४, फोन : ०११ - ७१८२२४८
अथवा
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन :०२९१-३२२०९